पर लगा लिए है हमनें....

जेण्डर-शाला मॉड्यूल

पर लगा लिए है हमनें....

जेण्डर-शाला मॉड्यूल

जागोरी JAGORI

प्रदान Pradan PROFESSIONAL ASSISTANCE FOR DEVELOPMENT ACTION

पर लगा लिए है हमनें...

जेण्डर–शाला मॉड्यूल

संकलन, लेखन व संपादन : प्रदान टीम

चित्रांकन : प्रदान लेखन टीम व शिरिष श्रीवास्तव

कवर सज्जा व अन्य रेखांकन : प्रदान लेखन टीम

वित्तिय सहयोग : यूरोपियन यूनियन

इस पुस्तक को या इसके किसी भी अंश का उपयोग जनहित व गैर–व्यापारिक कार्यो के लिए सहर्ष करें।

मार्च 2019

विषय-सूची

पेज संख्या

साभार

परिचय

जेण्डर–शाला के बारे में

मॉड्यूल का परिचय

1. जेण्डर–शाला के बैठक चक्र

1. भला ये जेण्डर क्या है?
2. सत्ता और पितृसत्ता
3. औरतें और नागरिकता
4. आजीविका का हक जितना तुम्हारा उतना हमारा

2. कुछ परिभाषाऐं और जानकारियां

3. समता के गीत

- साभार -

इस मॉड्यूल में शामिल अभ्यास, केस, कहानी, खेल और गानें कई संग्रहों से लिए गए है। कुछ सुने सुनाए है और कुछ इधर उधर से सीखे हुए । कुछ एक है जो अनुभव से भी बनाएं है, पर वो बहुत कम है। उन सभी लोगों का आभार, जिन्होंने इनकी रचना की और उनका भी जिनके जरिए ये हम तक पंहुचे । ये संग्रह उसी सीखने-सिखाने की परम्परा को आगे बढाने का एक छोटा प्रयास है। हम आभारी है - जागोरी संस्था के, जया श्रीवास्तव दी, आनन्दी संस्था, यू.एन. वूमैन, दिल्ली और ऑक्सफैम (वी कैन कैम्पेन) के भी। चित्रांकन के लिए विशेष आभार - शिरिष श्रीवास्तव जी का । अंजली प्रिन्टर्स जबलपुर का धन्यवाद, जिन्होंने हमारे इतने सुझावों और बदलावों को ग्रहण करते हुए हमारे साथ चले और मॉड्यूल को एक अपेक्षा अनुरूप स्वरूप दिया।

हम यूरोपियन यूनियन का शुक्रिया करना चाहते है, जिनके सहयोग के यह मॉड्यूल बन पाया।

और खासकर समूहों की महिलाओं का, जिनका, आर्थिक तंगी, सामाजिक दबाव, अपर्याप्त पोषण और पारिवारिक बन्दिशों से घिरे होने के बावजूद भी, आधी आबादी को समाज में उनकी जायज जगह दिलाने का जज्बा हम सबके लिए ऊर्जा-स्रोत है। हम उम्मीद करते है कि ये मॉड्यूल गांव स्तर महिला समूहों में पर जेण्डर की समझ को व्यापक करने में सहायक होगा।

संकलन, लेखन व संपादन टीम

सुफिया, भारती, स्वाती, अनम, क्लारा, इरफान, सुबोध, सौरभ, अर्चना, सुनन्दिता और मधु

परिचय

प्रदान की टीमें जेन्डर समानता की समझ का गांवों में, खासकर समूहों में फैलाव करने के लिए अलग–अलग तरीकें से कोशिश कर रही हैं। पर एक आंकलन के दौरान पाया कि जेण्डर की समझ कुछ गिनी–चुनी लीडर्स तक तो काफी हद तक पंहुच पायी पर गांव की आम सदस्य का नजरिया जेण्डर विषय पर अभी भी कच्चा सा या न के बराबर ही था। काफी सदस्य गतिविधी जैसे कमल–कमली, बन्धन का खेल इनके नाम तो बता पाती थी या उसकी रोचकता, हंसी–मजाक की बातों को तो दोहरा पाती थी पर गतिविधी के अन्दर के मुख्य सन्देश पर अभी उनकी पकड़ नही बन पा रही थी। मानसिकता के बदलाव की जो उम्मीद हम देखना चाहते थे हमारे प्रयास उस दिशा में नही जा रहे थे।

जिन महिलाओं ने अपने नजरियें में जेण्डर लैन्स को उतारा वो अधिकतर वो थी जिन्होंने कम से कम 3 से 4 आवसिय ट्रेनिंगों में भाग लिया था। एक आम सरल सी गांव की महिला के लिए, खासकर वो जो न केवल महिला होने के कारण बल्कि उम्र, गरीबी की वजह से भी सत्ता विहीन है या परिवार की जिम्मेदारियों में जुती हुयी है, ऐसी महिलाओं के लिए आवसिय ट्रेनिंग में आना इतना आसान नही होता। और जब गांव में इन गतिविधियों को किया तो वो एक इवेन्ट मात्र बनकर रह जाती थी। इतने ज्यादा गैप पर इतने कम इनपुट देने से अपेक्षित रिजल्ट नही मिल रहे थे। इन इन्पुट को खुद की जिन्दगी से जोड़कर देख पाने की गहरी चर्चा नही ट्रिगर हो पा रही थी।

कुछ इन्हीं कारणों को ध्यान में रखकर हमने अपने एप्रोच में बदलाव करने का निर्णय लिया। गांव के स्तर पर मीटिंग–साइकिल की अवधारणा तैयार की, ताकि कम से कम 3 दिन लगातार 2 से 2:30 घण्टे के सत्रों से गुजरते हुए एक आम सी महिला भी जेण्डर के आयामों की परतों को खोल सके और ठहर कर अपनी जिन्दगी से जोड़कर भी देख सके। इस तरह अन्दरूनी चेतना जगाने के लिए आवश्यक पाठ्यक्रम को तय किया और उसको इन बैठक चक्र (मीटिंग साइकिलस) में पैकेज किया। इस तरह से बेसिक पाठयक्रम को सत्रों में बांट दिया जिनको 4 मीटिंग–साइकिल में बण्डल किया।

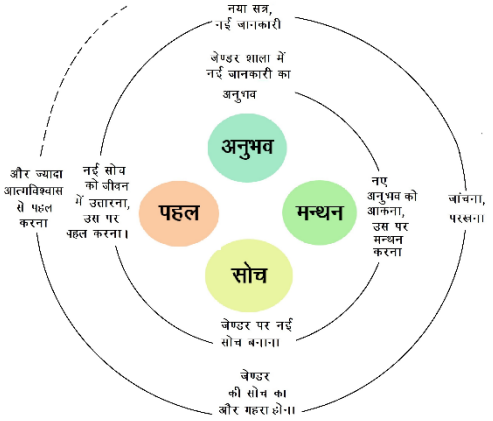

जेण्डर समानता आधारित बदलाव और वयस्कों के सीखने के सिद्धान्त को जोड़कर हमनें हरेक सत्र के डिजाइन को चित्र में दिखाए गए फ्रेमवर्क के अनुसार बनाने की कोशिश की है।

जेण्डर-शाला के बारे में

गांव में टोला स्तर पर समूहों के साथ आयोजीत की जाने वाली इन जेन्डर–शालाओं का मुख्य उद्देश्य महिलाओं की जेन्डर समानता पर समझ बनाकर व्यक्तिगत व सामूहिक पहल करने के लिए प्रेरित करना है। इस पाठ्यक्रम को समुदाय में जिन आयामों पर बदलाव लाने की अपेक्षा से बनाया गया है वो है–

बदलाव खुद के अन्दर–

1. सोच में – महिलाओं का खुद को पुरूषों से कमतर न आंकना ।
2. व्यवहार में – परिवार व समाज में बराबरी के हक के लिए पहल करना।

बाहर में बदलाव– (परिवार, गांव–समाज, व समूह के स्तर पर)

1. सोच में –

अ. परिवार व गांव–समाज में महिलाओं को बराबर आंकने की सोच को जगाना।

ब. समूह के प्रति महिलाओं की सोच को व्यापक करना कि उधार, परिवार की आय–बढ़ाने, के साथ–साथ महिला समूहों का एक बड़ा उद्देश्य महिलाओं को बराबरी का दर्जा दिलाना भी है।

2. व्यवहार में –

अ. जेण्डर आधारित घरों के काम के बंटवारे में बदलाव लाने की पहल।

ब. महिला समूहों का परिवार व समाज में बराबरी के हक के लिए पहल करना, विशेषकर आजीविका और ग्राम सभा में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी की दिशा में।

जेण्डर–शाला के बारे में कुछ और बातें –

- जोश, जानकारी और जुड़ाव के साथ एक्शन का समागम–
  सोच को बदलने के लिए 3 तरीके हो सकते है – जोश, जानकारी और जुड़ाव, ये तीनों ऐसी स्थितियां पैदा करते है जो हमें बदलाव लाने के लिए प्रेरित कर सकते है। इसलिए इन बातों को सत्रों में डालना आवश्यक है। सोच में आए बदलाव को स्थाई बनाने के लिए व्यवहार में उतारना यानी एक्शन जरूरी है।

- खास नही आम महिला–केन्द्रित एप्रोच–
  जेण्डर विषय की विडम्बना है कि जब भी कोई व्यक्ति इस नजरिए को व्यवहार में लाता है तब उसे ज्यादातर प्रतिरोध से गुजरना ही पड़ता है। इस दौरान यदि इस नई उपजी सोच को दोबारा खाद–पानी से सींचा न जाए तो व्यक्ति फिर से पुरानी सोच की ओर लौट जाता है, और वो भी ज्यादा मन खट्टा करके । हर व्यक्ति भावनात्मक, सामाजिक या बौद्धिक रूप से इन प्रतिरोधों को झेलने के लिए तैयार नही होता और वो भी निजी रिश्तों से आए प्रतिरोध के आगे हथियार डाल देता है। कुछ ही जोखिम उठाने वाली महिलाएं होती है जो इस प्रकार के रिस्क

उठा सके। अगर जेण्डर की समझ को घर–घर तक फैलाना है तो इस रणनिति के साथ चलना होगा कि एक सरल आम सी महिला भी इस पर कदम उठा सके इसलिए उद्यमी या अपवाद–केन्द्रित एप्रोच में न जाकर सामान्य महिला को केन्द्र में रखकर बदलाव की रणनिती बनानी होगी।

- शुरूआती कदम, सरल मुद्दों से –
  सफलता के लिए जरूरी है कि महिलाओं को सुझाव दें कि शुरूआती कदम में उतने विस्फोटक मुद्दे न ले जो न संभाल पाए। भावना में बहकर ही नही बल्कि सूझ–बुझके साथ मुददों का चुनाव करना और बदलाव की पहल करना।
- पुरूष–विरोधी या जेण्डर न जानने वाले को अपराधी घोषित करने की मानसिकता से बचना–
  जेन्डर चर्चा में खास ध्यान रखना होता है कि चर्चा पितृसत्ता विरोधी होने के बजाय पुरूष विरोधी न होने लगे। साथ ही जिन लोगो को जेन्डर की समझ न हो उन्हें नीचा दिखाने से भी परहेज करना चाहिए। किसी बात को न जानना गुनाह नही है। पर अन्याय सहना और करना जरूर गुनाह है।
- परिणाम आधारित चर्चा – सीखने के फोरम (मीटींग–साइकिल) और एक्शन के फोरम (समूह/ग्राम संगठन) में सामंजस्य और उनका एक लय में मिलकर काम करना, जेण्डर–एक्शन के लिए जरूरी होगा। जेण्डर लेन्स का उपयोग महिलाओं और समूह की प्राथमिकता से जुड़ा न होने से या बहुत जटिल होने से, जेण्डर शाला में सीखी बातों को व्यवहार में लाना और उन्हें स्थायी करना, आम सदस्यों के लिए मुश्किल होता है। जरूरी है जो भी जेण्डर–एक्शन प्लान बनें उनका रिव्यू 3 माह पर ग्राम संगठन समाजिक कार्य की उप–समिति जरूर करें।
- जेण्डर–शाला की कुछ और बातें :
  1. सहजकर्ता समुदाय के अनुसार ही 3 दिन को समय ले। पर किसी भी स्थिति में 3 दिन लगातार का ही समय लें। इस बैठक चक्र को न तोड़ें।
  2. अच्छा रहेगा पहली पहली मीटिंग–साइकिल के अन्त में ही पूरा कैलेण्डर बना लें। तीन दिन के साइकिल के बाद अनुपस्थितियों को देखते हुए एक दिन एक्स्ट्रा रखें जो महिलाओं से कोई पाठ छूटा हो उसका कवर करने के लिए।
  3. जेण्डर–शाला का मतलब जेण्डर की पाठशाला है। इसके लिए अनुशासन रखना जरूरी है।
  4. किसी आकस्मिक काम से अगर साइकिल का क्रम टूटे तो विशेष बैठक कर के कैम्प का आयोजन कर छूटी हुई महिलाओं का कोर्स पूरा करें।
  5. जेण्डर–शाला के हाजीरी चार्ट से परीचित कराऐं। सहजकर्ता हर दिन के सत्र के अन्त में हाजीरी ले।
  6. जेण्डर–एक्शन प्लान का रिव्यू 3 माह पर सदस्य/समूह/ग्राम संगठन और संघ पर जरूर करें। इसकी निगरानी समाजिक कार्य की उप–समिति करें।
  7. गांव संगठन पर 'जेण्डर समानता उत्सव' में सभी महिलाऐं जिन्होंने सफलता से कोर्स पूरा किया उन्हें महिला संगठन, इस जेण्डर शाला को सफलता से पूरा करने का सर्टिफिकेट दें।
- बैठक–चक्र की चर्चा के पांच नियमः
  1. समय पर आना– चर्चा में समय पर आना।
  2. गोल में बैठना– ताकि सब एक दूसरे को देख सके।
  3. सीखे और सीखाऐं – खुद सीखना और दूसरों को सीखने में मदद करना। जो महिलाऐं कम बोलती है उन्हें खुलने में मदद करें।
  4. सवाल करना–विषय को अच्छे से समझने के लिए सवाल करना।
  5. दोहराना–नई बातों को मन में बैठाने के लिए दोहराना जरूरी है।

जेण्डर-शाला का पाठ्यक्रम

बैठक चक्र	दिन	सत्र का नाम
बैठक चक्र - 1	भला ये जेण्डर क्या है?	
	पहला दिन	लीलावती की कहानी
	दूसरा दिन	कमल-कमली
	तीसरा दिन	किसका पलड़ा भारी
बैठक चक्र - 2	सत्ता और पितृसत्ता	
	पहला दिन	महिलाओं पर समाज के बन्धन
	दूसरा दिन	सत्ता की दौड़
	तीसरा दिन	हिंसा अब और नही
मेरा परिवार कितना बराबर : महिला समूह वार वर्तमान स्थिति का आंकलन		
बैठक चक्र - 3	औरतें और नागरिकता	
	पहला दिन	क्या हम नागरिक नही!
	दूसरा दिन	जिम्मेदार नागरिक और संविधान
	तीसरा दिन	हमारे गांव में हम भी सरकार
बैठक चक्र - 4	आजीविका का हक - जितना तुम्हारा उतना हमारा	
	पहला दिन	हम भी है किसान
	दूसरा दिन	है सम्पति पर हक मेरा
	तीसरा दिन	आर्थिक आजादी की ओर
आजिविका में जेण्डर समानता : महिला समूह वार वर्तमान स्थिति का आंकलन और कार्य योजना		
सीखेगें ! करेंगें ! बढ़ेगे ! (गांव संगठन पर जेण्डर समानता उत्सव (जो सीखा उसकी प्रदर्शनी और आगे की योजना)		

जेण्डर-शाला हाजीरी पन्ना

जेण्डर-शाला का स्थान:.....टोला:.....गांव:.....सहजकर्ता:.....

क्र0	नाम	समूह	चक्र	बैठक चक्र – 1				बैठक चक्र – 2				समूह–स्तरिय प्रक्रिया–योजना व रिव्यू	बैठक चक्र – 3				बैठक चक्र – 4			समूह–स्तरिय प्रक्रिया–योजना व रिव्यू	ग्राम–स्तरिय प्रक्रिया–योजना व रिव्यू
				भला ये जेण्डर क्या है?				सत्ता और पितृसत्ता					औरतें और नागरिकता				का का हक – जितना तुम्हारा उ				
			दिन	पहला दिन	दूसरा दिन	तीसरा दिन	एकस्ट्रा दिन	पहला दिन	दूसरा दिन	तीसरा दिन	एकस्ट्रा दिन		पहला दिन	दूसरा दिन	तीसरा दिन	एकस्ट्रा दिन	पहला दिन	दूसरा दिन	तीसरा दिन		
			सत्र का नाम	लीलावती की कहानी	कमल–कमली	किसका पलड़ा भारी	अनुपस्थित सदस्यों के पाठ	महिलाओं पर समाज के बन्धन	सत्ता की दौड़	हिंसा अब और नही	अनुपस्थित सदस्यों के पाठ		क्या हम नागरिक नही!	जिम्मेदार नागरिक और संविधान	ळमारे गांव में हम भी सरकार	अनुपस्थित सदस्यों के पाठ	हम भी है किसान	है सम्पति पर हक मेरा	आर्थिक आजादी की ओर		
			दिनांक																		
1																					
2																					
3																					
4																					
5																					
6																					
7																					
8																					
9																					
10																					
11																					
12																					
13																					
14																					
15																					
16																					
17																					
18																					
19																					
20																					
21																					
22																					
23																					
24																					
25																					

बैठक चक्र - 1

भला ये जेण्डर क्या है?

दिन 1– लीलावती की कहानी
दिन 2– कमल–कमली
दिन 3– किसका पलड़ा भारी

भला ये जेण्डर क्या है?

उद्देश्य :

- ✓ जेण्डर का मतलब समझना
- ✓ महिला और पुरूष से जुड़ी समाजीकरण की प्रक्रिया और समाज की बनाई गैर बराबरी को समझना।
- ✓ जेंडर भेदभाव से जुड़े मिथकों को खोलना–समझना
- ✓ समाज के बनाए महिला व पुरुष के काम की ग़ैरबराबरी को समझाना।

चर्चा के लिए माहौल और आवश्यक सामान :

- ✓ एक स्थान जंहा 20 से 25 महिलाऐं गोल में बैठ कर खुल कर चर्चा कर सकतीं हो ।
- ✓ तराजू और बहुत सारे एक जैसे वज़न के छोटे पत्थर।

समय : प्रति दिन 2:30 घंटा

पहला दिन

लीलावती की कहानी

गतिविधी 1:सवालों के घेरे में (सोश्योग्रामी)

प्रक्रिया :

1. सवाल–जवाब – सभी महिलाऐं खड़ी हो जाए और इधर उधर घूमें। उसी दौरान सहजकर्ता नीचे दिए सवाल उनसे पूछे– जैसे:
    - एक दूसरे को नमस्ते या सीता–राम करे और घुमते हुए सभी से मिले व जान पहचान बढ़ाऐं।
    - घूमते–घूमते 3 के समूह में खड़े हो जाए और बाकी दोनो को बताएं कि आपको खाने में क्या पसन्द है?
    - घूमते घूमते 2 के जोड़े में खड़े हो जाए और दूसरी साथी से पूछे कि गांव में उनकी मनपसन्द जगह क्या है?
    - अन्य सवाल जोड़ सकते है– यंहा आकर आपको कैसा लग रहा है?
    - रोज के घर खेत के काम को छोड़कर – बाकि और औरतों से मिलकर आपको कैसा लग रहा है? और क्यों?
2. स्वागत व परिचय : सहजकर्ता पिछले सवाल से जोड़ते हुए सभी साथी मिलकर गीत गाए –'मिलकर हम नाचेंगें गाएगें'। सभी साथियों के गोल में बैठनें का इन्तजार करें और उनके इस सखियों की पाठशाला में आने के निर्णय का स्वागत करें।
3. सवालों के घेरे में (सोश्योग्रामी) : इस अभ्यास में महिलाओं को पूरे कमरे की जगह का उपयोग करते हुए घुमने के लिए कहेंगें और सवाल पूछे। सदस्यों को अलग अलग सवाल करते हुए अलग अलग ग्रुप में बांटे। और उनका इसी ग्रुप में होने के कारणों के बारे में पूछे। यानि किस वजह से वो इसी ग्रुप में खड़ी है।

- सवाल–समूह : 1 व्यक्तिगत सवाल

    1- कितनी महिलाओं ने हरे रंग की साड़ी पहनी है वो अपनी सहेली ढूढ़े, इसी प्रकार लाल रंग, पीले और नीले रंग की साड़ी वाली महिलाऐं अपनी सहेलियां ढूढ़ ले।

    2- कितनी महिलाओं का खेलना पसन्द है?

3- कितनी महिलाऐं साइकिल चलाती हैं?

4- कितनी महिलाओं के पति रसोई के रोज के काम में मदद करते है?

- सवाल–समूह : 2 पढ़ाई के अनुसार

1- कितनी महिलाएं स्कूल गयी है वो सब एक साथ खड़े हो जाए।

2- उसमें से जो 1 से 5 क्लास तक स्कूल गयी है वो एक ओर आ जाए।

3- इसी तरह 6 से 8वी तक

4- 9 से 12 वी तक।

5- या उससे आगे।

- सवाल–समूह : 3 आवाजाही के बारे में

1- कितनी महिलाए अपनी मर्जी से अपने मायके जा सकती है।

2- कितनी महिलाए अपनी मर्जी से दूसरे गांव जा सकती है।

3- कितनी महिलाए कलेक्टर आफिस गयी है।

4- कितनी महिलाए थाना गयी है।

- सवाल–समूह : 4 सम्पति के हक के बारे में

1- कितनी महिलाओं के नाम पर बैक खाते में बचत है।

2- कितनी महिलाओं के नाम पर जमीन है।

3- कितनी महिलाओं के पास गहने ळें

4- कितनी महिलाओं ने अपने मायके में पैसे की मदद करी है?

- सवाल–समूह : 5

1- महिलाऐं वैवाहिक स्थिति के हिसाब से बट जाऐं– विवाहित, विधवा, परित्यकता, अविवाहित आदि।

2- विवाहित में फिर से दो समूह बनाने को कहे जिनक बच्चे है और जिनके बच्चे नही है।

3- फिर जिनके बच्चे है वो महिलाऐं फिर दो ग्रुप में बट जाए जिनके 3 या 3 से ज्यादा बेटियां हो या सिर्फ बेटियां हो वो अलग ग्रुप अना ले।

4- कितनी शादिशुदा महिलाओं के पति ने कभी भी उन्हें नही मारा।

5- कितनी महिलाओं ने पिछले 6 माह में मार खायी है।

6- कितनी महिलाऐं आए दिन हिंसा सहती है।

गतिविधी 2–लीलावती की कहानी

उद्देश्य : औरत की पहचान और उसका व्यक्तित्व उसकी पारिवारिक भूमिकाओं और जिम्मेदारियों में पीछे चला जाता है। इस बात को चर्चा में लाना।

प्रक्रिया : सभी महिलाओं को ये कहानी सुनाऐ।

सर्वेकर्ता रजनी एक गांव में पंहुची। कई घरों का सर्वे करके रजनी एक महिला के घर पंहुची। रजनी ने पूछा महिला से पूछा– तुम्हारा क्या नाम है? महिला बोली – 'मैं धनीराम की पत्नी हूं।' रजनी ने पूछा– 'तुम्हारा भी तो कोई नाम होगा। मैं तुम्हारे पति का नही तुम्हारा नाम पूछ रही हूं।' महिला बोली – 'अरे इस गांव में तो सभी मुझे धनीराम की बीवी से ही जानते है। आप भी कागज में यही लिख दो।' सर्वेकर्ता रजनी ने फिर समझाया– ' जैसे तुम्हारे पति का नाम धनीराम है, मेरा नाम रजनी है, वैसे ही तुम्हारा भी नाम होगा, वो बताओ।' महिला बोली – 'अच्छा राजू की मां लिख दो। गांव की औरतें मुझे राजे की मां कहकर ही बुलाती है।'

सर्वेकर्ता रजनी परेशान हो गयी और अपने कागज बांधकर चलीगयी।

उसके जाने के बाद महिला सोच में पड़ गयी अरे मुझे तो अपना नाम ही नही याद आ रहा। क्या थ मेरा नाम? सोचते सोचते वो ससूर के पास गयी उसने पूछा–' ससूर जी मेरा नाम क्या है?' ससूर हंसते हुए बोले – 'अरे बहु मै तो तुझे बहु ही बुलाता हूं। अब तो यही तेरा नाम है। महिला उदास होकर सास के पास गयी और बोली– 'मां जी मेरा नाम क्या है? सास ने कहा – 'तू मेरे धनी की घरवाली है ओर क्या होगा तेरा नाम यही है।'

महिला का मन अभी भी परेशान था सो वो पड़ोस में गयी और उनसे पूछा – 'बहन मेरा नाम क्या है आपको याद है क्या?' पड़ोसी बोली –'मै तो तुम्हें राजू की मां ही बुलाती हूँ।'

अगले दिन बाजार का दिन था । महिला घर का सामान लेने बाजार पंहुची। तभी उसे पीछे से आवाज आयी। 'लीलावती ओ लीलावती, कैसी है तू?' ये आवाज उस महिला के बचपन की सहेली की थी। महिला खुश हो गयी– ' लीलावती हां यही तो था मेरा नाम।' उसने दौड़ के अपनी सहेली को गले लगा लिया। और बोली – 'एक तू है जिसके लिए मेरी पहचान आज भी मेरा अपना नाम–लीलावती है। वरना दुनिया के लिए तो मैं धनीराम की पत्नि हूं या राजू की मां हूं।' मेरी खुद की पहचान ही खो गयी।

चर्चा के लिए सवाल–

- ससुराल में लोगो को लीलावती का नाम क्यों नही पता था?
- लीलावती ने ऐसा क्यों कहा कि– मेरी खुद की पहचान ही खो गयी?
- आपको ससुराल में किस–किस नाम से जाना जाता है?

चर्चा को समेटना :

सहजकर्ता महिलाओं से सोशियोग्रामी और लीलावती की कहानी से निकली बातों को और उनके जवाबों को समेटकर सामने रखेंगें। सवाल करके उनके अर्न्तमन को झकझोरेगें कि–

- ✓ क्या महिला की अपनी पहचान होनी चाहिए या वो केवल किसी की बेटी, किसी की पत्नि और किसी की मां के रूप में ही पहचानी जानी चाहीए?
- ✓ क्यों औरतों को ही सरनेम/जाति नाम बदलना पड़ता है?

अन्त में:

आज की चर्चा आपको कैसी लगी?

क्या लगता है ये पाठशाला चलनी चाहिए या नही? हमने इसे जेण्डर–शाला का नाम दिया है।

अन्त में एक बार फिर से सभी का इस सखियों की पाठशाला में आने के निर्णय का स्वागत करें। ये वक्त उनका अपना है, यंहा हम महिलाऐं एक दूसरे के साथ चर्चा करेगीं, गीत गांएगी, एक दूसरे के मन की बातों को सुनेगी और अपनी जिन्दगी, परिवारों और समूह में प्यार और समानता की नींव का मजबूत करेंगी। हम सभी की जिन्दगी में बहुत काम है मगर इस व्यस्त जीवन में अगर अपने लिए भी समय निकाल पाए और फिर बाद में खुद ही तय करें कि ये पाठशाला चलनी चाहिए कि नही। यंहा हम सब मास्टर होगें और हम ही सीखने वाले भी होंगें, सहजकर्ता के रूप में एक साथी जरूर है जो चर्चा को चलाने में मदद करेंगी। सभी पाठों में आना जरूरी हैं नही तो कोर्स पूरा नही होगा। अगले दिन सभी को सही समय पर आने के लिए चेताऐं। सहजकर्ता महिलाओं के साथ हाजीरी–रजिस्टर के बारे में बताए और हाजिरी की उपयोगिता को बताते हुए हाजिरी ले।

इस गीत 'मिलकर हम नाचेगें गाएगें.....'के दोबारा गाते हुए , आज की जेण्डर–शाला की पहली बैठक की समाप्ती करें।

दूसरा दिन

कमल–कमली

गतिविधी 1–कमल कमली

उद्देश्य : समाज कैसे औरत और आदमी के लिए अलग अलग नियम बना देता है और बार–बार अलग–अलग ढंग से उम्र भर उन नियमों को थोप कर लिंग आधारित गैरबराबरी बनाता है।

प्रक्रिया :

- ✓ सभी साथियों का स्वागत करें और गोल में बैठनें का इन्तजार करें। एक बार हाजिरी ले ले कि जानकारी रहें कि कौन सदस्य आयी है और कौन नही और क्यों? क्या करें कि कोई सदस्य न छूटें।
- ✓ पिछली चर्चा के बारे में पूछें। चर्चा कैसी लगी ? घर जाने के बाद क्या किया, उस पर किसी से बात की? 2–3 सदस्यों से उदाहरण की तौर पर सूनें। और वंहा से चर्चा को आज के विषय से जोड़े।
- ✓ सदस्यों को कहानी सुनाए कि एक घर में देवरानी और जेठानी के एक ही दिन बच्चे हुए है। एक को लड़का और एक की लड़की। सदस्यों से पूछें–
  - ✓ लड़का और लड़की के पैदा होने की खबर, डाक्टर किस तरह बाहर आकर बाकि घर वालों को खबर देगी?
  - ✓ कहानी को आगे बढ़ाए कि इन बच्चों का नाम रखा गया कमल–कमली। महिलाओं से पूछे कि लड़के का क्या नाम रखा गया और लड़की का क्या?
- ✓ सदस्यों में से किन्ही दो को आगे आकर कमल कमली बनने को कहे। बैठने की जगह के बीच में एक लाइन बनाएँ और उन दोनों को इस लाइन के ऊपर खड़े हाने के लिये कहें। सदस्य तय कर लें कि इनमें से कौन कमल है और कौन कमली।
- ✓ पहले चरण पर चर्चा करें कि कमल और कमली के जन्म के समय परिवार में क्या रसम होती है, अपने गांव के रिवाज के अनुसार बताऐं। उन रसम रिवाज से और परिवार के लोगों का, कमल और कमली की मांओं के उपर क्या प्रभाव पड़ता होगा? मांओ पर जैसा असर पड़ेगा वैसा ही बच्चों पर भी पडेगा। बताए गए प्रभावों के अनुसार कमल और कमली वैसे ही कदम बढ़ाएगें जैसे–

1. अगर अच्छा प्रभाव पड़ता होगा तो एक कदम आगे,
2. अगर बुरा तो एक कदम पीछे,
3. अगर कोई प्रभाव नही पड़ता होगा तो अपने स्थान पर रहना होगा।

✓ इसी प्रकार आगे के चरणों में कमल या कमली को, तारीफ या सुख–सुविधा मिलती है कठिनाई का सामना करना पड़ता है या कोई असर नही होता इसके अनुसार वो लाइन से एक कदम आगे आएगें, पीछे जाएगें या अपनी जगह पर खड़ी रहेगें। सदस्यों को आगे के नियम बताऐं–
उदाहरण के लिए कुछ प्रश्न हैः इनके उत्तरों के अनुसार बीच में खड़ी दोनों महिलाएँ आगे बढ़ सकती हैं या रूकी रह सकती हैं या पीछे जा सकती है।

✓ <u>जन्म से छः महिने की उम्र होने तक</u> :
- जन्म के समय कमल और कमली के घर कैसा माहौल रहता है।
- छठी, बारसा या अन्नप्राशन के समय किसके घर क्या–क्या होता है?
- इस समय कमल और कमली की मां के साथ किस किस तरह का व्यवहार होता है?

✓ <u>छः माह से आठ साल तकः</u>
- कमल और कमली को एक ही सामान परवरिश करते है या दोनों में कुछ अंतर होता है जैसे गोदी में उठाना आदि।
- इस समय कमल और कमली को किस तरह के खिलौने दिए जाते है?
- स्कूल में दाखिला के लिए कमल और कमली के लिए कौन से स्कूल का चुनाव किया जाता है?
- स्कूल जाने के पहले और आने के बाद कमल और कमली क्या–क्या करते हैं? दोनों के साथ कैसा व्यवहार होता है?
- पढ़ाई का खर्च, ट्यूशन, खेल आदि की सुविधाएँ और बढ़ावा किसे ज़्यादा मिलता है?

✓ <u>नौ साल से 15 साल तकः</u>
- ट्यूशन पढ़ाई का खर्च किस पर ज्यादा होता है।
- कमल और कमली के इस उम्र में किस किस तरह के बदलाव होते है ?
- इस समय समाज का नजरिया रवैया कमल– कमली के लिए होता है।

✓ <u>अठारह से पच्चीस साल की उम्र तकः</u>

- कमल कमली के जीवन में क्या बदलाव आता है?
- शादी के बाद जीवन में क्या बदलाव आता है? किसको अपना घर छोड़कर जाना पड़ता है?
- अपने ससुराल में कमली और कमल को क्या क्या करना पड़ता है?

✓ प्रक्रिया के दौरान जो अन्तर सामने दिखें उन्हें अच्छे तरीके से रखें। और चर्चा करें। दोनों के बीच जो दूरी होगी उसके ऊपर चर्चा करें।

चर्चा के लिए सवालः

- क्या लड़की की माँ और लड़के की माँ के अनुभव अलग–अलग हैं? क्या दोनों के साथ समान व्यवहार किया जाता है?अगर कमली उसकी मां की चौथी बेटी होती तो समाज और परिवार को रवैया उसके प्रति कैसा होता?
- ये भेदभाव माँओं और बच्चों के शरीर और मन पर क्या प्रभाव डालते हैं?
- ये भेदभाव क्यों हैं?

चर्चा को समेटनाः

सहजकर्ता यंहा पर समूह के उद्देश्य को याद कराए कि समूह का बड़ा उद्देश्य क्या है गांव की हर महिला और लड़की को सशक्त करना और गांव में समानता और प्यार फैलाना। एक सदस्य को उठ कर समूह बनने को कहे और कमली बनी सदस्य का हाथ पकड़ कर कमल के बराबर खड़ा कर दें। फिर से दोहराऐं कि यही है समूह का एक बड़ा उद्देश्य कि गांव के हर कमल और कमली में समानता हो।

गतिविधी 2–लिंग और जेण्डर

उद्देश्य : समझना कि लिंग और जेण्डर में क्या फर्क है।

प्रक्रिया :

✓ कमल और कमली के बीच भेदभाव समाज ने बनाया है या प्रकृति ने?

✓ कुदरत ने जो भेदभाव बनाया है उसे लिंग कहते और लिंग के आधार पर जिस भेदभाव को समाज बनाता है उसे जेण्डर कहते है। जेण्डर और लिंग की नीचे लिखी परिभाषा को 2–3 बार दोहराऐं।

जेण्डर व लिंग का मतलब क्या है?

लिंग : महिला, पुरूष व अन्य लिंग के व्यक्तियों के शरीर कें अन्तर जो प्रकृति ने बनाये है।

जेण्डर : महिला, पुरूष व अन्य लिंग के व्यक्तियों में ऐसा भेदभाव जो समाज बनाता है ।

हम उदाहरण से और समझते है, जैसे उदाहरण 1–''महिलाओं के लम्बे बाल होते है।'' पर पुरूष के बाल भी बढ़ सकते हैं। सरदार पुरूष लम्बे बाल रखते हैं, इसलिए ज्यादातर महिलाओं का लम्बे बाल रखने का चलन समाज की देन है न कि प्रकृति की इसलिए ये जेण्डर है। उदाहरण–2 ''महिलाएं बच्चों की अच्छी देखभाल करती हैं।'' बच्चे को जन्म देना, उसको दूध पिलाना, इन 2 कार्यो के अलावा बच्चों का हर काम पुरूष भी कर सकते है। वो जन्म से बच्चों की देखभाल करना नही सिखती बल्कि परिवार व समाज उनको सिखाता है। सेक्स और जेंडर के फ़र्क को थोड़ा और समझ लें–

	लिंग (प्रकृति का बनाया अन्तर)	जेण्डर (समाज का बनाया भेदभाव)
1.	शरीर के अन्तर जैसे– आदमी में दाढी–मूछ, औरतों में स्तन होना और जननांगों में अन्तर।	समाज महिला, पुरूष व अन्य लिंग के व्यक्तियों के काम और अधिकार में भेदभाव करता है।
2.	प्राकृतिक भेदभाव स्थान, समय, परिवार, जाति, धर्म के अनुसार नही बदलता।	जबकि जेण्डर व्यक्ति, स्थान, समय, परिवार, जाति, धर्म के अनुसार बदलता रहता है। एक परिवार के 2 बहनों या भाइयों के परिवार में भी बदल जाता है। एक भाई अपनी पत्नि पर रोक–टोक करता है पर दूसरा नही।
3.	बिना मेडिकल हस्तक्षेप के प्राकृतिक भेदभाव बदला नही जा सकता।	जेण्डर भेदभाव को हर व्यक्ति पहल कर बदल सकता है

चर्चा को समेटना :

सदस्यों के स्वयं के अनुभव जरूर सुनें। उनके घर–परिवार–समाज में क्या होता ह?। अक्सर महिलाएँ अपने प्रति होने वाले व्यवहार व अत्याचार की बात नहीं करना चाहतीं। हमें कोशिश करनी चाहिए कि हर कोई खुल सके। यह स्पष्ट करें कि उनके ख़ुद के जीवन से ही साफ़ हो सकता है कि औरत मर्द के भेदभाव को ज़िन्दगी के हर चरण में अलग–अलग तरीके से बनाया व मजबूत किया जाता है। विभिन्न आदिवासी, गैरआदिवासी, जाति, धर्म, कौम, वर्ग और देश की औरतों के लिए इस भेदभाव के रूप अलग–अलग हो सकते हैं। कोई एक कायदा सब पर लागू हो – ये ज़रूरी नहीं। पर हर जगह औरत को कमतर आंका गया है।

अन्त में:

हम सभी समाजीकरण की इस प्रक्रिया से गुज़रते हैं और मर्द–औरत की बनी–बनाई तस्वीर में अपने को फ़िट करते चलते हैं। सवाल ये है कि:

- क्या हम रीति–रिवाज़ों, क़ायदे–कानूनों को आँखें मूँदकर मानते हुए ग़ैरबराबरी में जीते रहें या सोचे कि क्या जीने के और तरीके नहीं हैं जिसमें औरत मर्द सभी चैन और इज़्ज़त की ज़िन्दगी जी सकें?
- जेन्डर समाज द्वारा बनाई गई ग़ैरबराबरी है, वो जेन्डर–बेइन्साफ़ी और अत्याचार का आधार है। जिसकी वजह से देश आजाद हो जाने के बावजूद आज भी औरत आजाद नही हो पायी है। जेन्डर–ग़ैरबराबरी महिलाओं के मानव–अधिकार का हनन करता है।
- क्या आप अपने स्तर पर इस ग़ैरबराबरी के लिए कुछ करना चाहती हैं, अगर चाहती हैं तो क्या व क्यों?
- ये स्पष्ट करें कि समाजीकरण अपने आप में समस्या नहीं है। समस्या है भेदभाव की राजनीति। हमारी समाजीकरण की प्रक्रिया क्या होगी, जो समानता, न्याय और अधिकार की नींव पर खड़ी होगी न कि भेदभाव और शोषण की – इस पर सोच बनाएँ।
- गीत – 'दरिया की कसम' गाऐं और गीत पर थोड़ी बातचीत करें। मुख्य बिन्दु हो सकते हैं – हमें क्यों और क्या बदलना है, साथ क्यों कदम उठाने हैं, आदि। गीत सिखाएँ, सब साथ गाकर आज की चर्चा का अन्त करें।

इस सत्र को इस नारे के साथ दोहरा कर समाप्त करे–

प्रकृति ने दिया है केवल लिंग का अन्तर
समाज ने बनाया जो भेदभाव, वो है जेण्डर

तीसरा दिन

किसका पलड़ा भारी

गतिविधी 1– मेढ़क–मेढ़की

उद्देश्य : जेंडर भेदभाव से जुड़े मिथकों को खोलना–समझना

प्रक्रिया :

- सहजकर्ता इस छोटी सी कहानी को ऐसे पढ़ें कि दोनों मेढ़कों का लिंग पता न चले। कहानी है :

> रात का वक़्त था। दो मेढ़क आराम से अपने बिस्तर पर सो रहे थे। एकाएक बड़े ज़ोर की आवाज़ आई, शायद बादल गरजे या कोई चोर घर में घुसा। एक मेढ़क डर के मारे अलमारी के नीचे छुप गए, दूसरे डंडा लेकर दरवाज़े की ओर लपके।

चर्चा के लिए सवाल :

– इनमें से कौन सा मेढ़क पुरुष था और कौन सी महिला?
– फिर सदस्यों से पूछे कि उन्होंने ऐसा क्यों सोचा?

चर्चा के समेटना :

- औरत व मर्द के समाज में आम तौर से माने–जाने वाले व्यवहार की बातें आ सकती हैं, जैसे डंडा लेकर पुरुष भागा होगा, क्योंकि वो रक्षक है।' लेकिन ये भी आ सकता है कि 'डंडा लेकर स्त्री भागी क्योंकि उसे बच्चों की ज़्यादा चिन्ता है।'
- इस तरह के कथनों को लेकर महिला और पुरूष के बारे में समाज की बनी हुयी तस्वीर पर बाते करें और बताए कि सच्चाई दोनों में से कोई भी हो सकती है।

गतिविधि 2– औरत के काम, आदमी के काम

उद्देश्य : समाज के बनाए महिला व पुरुष के काम की ग़ैरबराबरी को समझाना।

सामग्री : तराजू और बहुत सारे एक जैसे वज़न के छोटे पत्थर।

प्रक्रिया :

1. सभी महिलाओं को दो ग्रुप में बँटने को कहें – एक महिला ग्रुप और एक पुरुष ग्रुप। एक महिला को तराजू पकड़ने को कहें।
2. सभी को पहले से रखे लगभग समान आकार के छोटे पत्थरों में से 2–2 पत्थर उठाने को कहें।
3. अब सहजकर्ता सुबह से शाम तक महिला और पुरुष द्वारा किए जाने वाले कामों की जानकारी लेंगी। महिला ग्रुप से महिला के काम की और पुरुष ग्रुप से पुरुष के काम की। जैसे महिला कितने बजे उठती है और पुरुष कितने बजे। सबसे पहले क्या करते हैं, सुबह क्या करते है? दोपहर में क्या और ऐसे ही रात को सोने तक क्या–क्या करते हैं।
4. पुरुष ग्रुप की सदस्य पुरुष के काम बताती जाँएगी और महिला ग्रुप की सदस्य महिला के काम। हर काम के लिए दोनों समूह के सदस्य, अपने–अपने पलड़े पर एक–एक पत्थर रखती जाएंगी। यानी पुरुष और स्त्री के दिन भर के कामों की सूची बन जाएगी। इससे पता चलेगा कि 24 घंटे में कौन, कब, क्या, करता है किसके काम ज़्यादा वज़नदार हैं व महिला कम काम करती है या ज़्यादा।

चर्चा के लिए सवाल :

- ✓ किसके हिस्से में ज़्यादा काम हैं और क्यों? क्या कोई ऐसे काम हैं जो पुरुष बिल्कुल नहीं कर सकते या महिला बिल्कुल नहीं कर सकती? अगर पुरुष उसे करे तो क्या होता है और अगर महिला करे तो क्या होता है? कड़ी मेहनत के बाद किसे ज़्यादा आराम का समय मिलता है – औरत को या मर्द को?
- ✓ इस पूरे दिन के चक्र में कौन सा समय है जो केवल महिला का अपना है परिवार का नहीं वैसे ही पुरुष का अपना समय है किसी और का नहीं। क्या दोनों में अन्तर है? जब औरतें मर्दों के काम करती हैं और मर्द औरतों के, तो कैसा लगता है? क्या आपके घर या जान–पहचान में पुरुष कभी महिलाओं का काम करते हैं?

चर्चा को समेटना :

औरत पर काम का बोझ ज़्यादा है। औरत के काम को – चाहे वो खेत–खलिहान में हो, सड़क–कुएँ पर हो या आँगन–रसोई में हो – बराबर इज़्ज़त नही मिलती। मर्द के काम को ज्यादा मान्यता मिलती है, क्या महिलाओं के काम की मजदूरी बराबर मिलती है? हर तरह के काम ज़रूरी है ज़िन्दगी चलाने के लिए। औरत की मेहनत और समय ज्यादातर परिवार के कामों मे जाते है, खुद के लिए कम। ज़रूरत है कि औरत खुद के काम को महत्त्व दे, अपने को कमतर न समझे।

बैठक चक्र की तीन दिन की चर्चा को समेटना :

- ✓ दोहराऐं कि पिछले 3 दिन में क्या चर्चा हुई?
- ✓ समाज में हम जो बाते सीखते है, अपना लेते हैं, व्यवहार में लाते है, जैसा कि हम अपने बड़ों को करते देखते है और वो, जो उन्होने भी अपने बड़ो से सीखा है और कुछ इसी तरह ये हमारे व्यवहार परम्पराऐं बन जाते है और इन परम्पराओं का चक्र चलता रहता है। बिना ये सोचे कि ये सही है या नहीं ।
- ✓ इन परम्पराओं रिवाजों में हम किसी के साथ गैरबराबरी तो नही कर रहे है? क्या ये रिवाज, ये चलन, समाज के हर तबके के हर व्यक्ति खासकर औरतों को उसके सपनों को जीने का, उन्हे अपनी स्वतंत्रता को, अवसरों को पाने का पूरा मौका देते है?

- ✓ ऐसी बातें जो दूसरे के साथ अन्याय करें उन्हें निकाल फेंकनी चाहिए। काम का बंटवारा का भेदभाव ऐसा ही अन्याय है, जो महिलाओं और लड़कियों को घर की जिम्मेदारियों में बांधे रखता है और उनको आगे आत्म निर्भर बनने के बराबर अवसर नही देता।
- ✓ सोचिए जब आप बैठक में या ट्रेनींग में जाने का सोचती है तो घर बच्चों के काम का ख्याल आता है और कितनी ही औरते तो भाग भी नही ले पाती। क्या ऐसा पुरूषों के साथ होता है? और औरत जाती भी है तो घर के काम का बोझ अपनी बहु/बेटी/मां/सास पर छोड़ के जाती है यानि एक औरत पर ही। एक संघ की सक्रिय लीडर ने बताया था कि उसके बैठकों में भाग लेने की वजह से उसकी बेटी पर बहुत बोझ आ गया और पहले वो सोचा करती थी आगे पढ़ने का पर वो नही पढ़ पाई।
- ✓ दूसरी तरफ पुरूष भी जान बूझकर ऐसा नही करते समाज ने उन्हें सीखाया ही ऐसा। उनको भी बदलने में मदद करनी होगी। अगर लड़को को घर का काम करना सिखाएगें तो वो भी दूसरों की फिक्र करना सीखेगें। एक बेहतर इन्सान बनेगें। उन्हें भी ये मौके देने होगें। अगर उनके मन में, देखभाल और प्यार होगा तो वो हिंसक होने और गलत संगत में जाने से बचेगें। कई संस्थाऐं मर्दों को जेण्डर समान यानि बेहतर इन्सान बनाने के लिए काम कर रही है।
- ✓ इस गैर बराबरी के कुचक्र को तोड़े बिना समाज में बराबरी नही आएगी।

बदलाव का पहला कदम : 'जो प्यार से भरा है वही तो परिवार है'

- ✓ जेण्डर की इस पाठशाला का एक जरूरी हिस्सा है बदलाव के लिए प्रयास करना। सहजकर्ता सदस्यों से कहे –
- ✓ समाज में समानता लाने की बदलाव खुद से ही करनी ही होगी। अपने लिए कोई भी एक चीज चुनिए जो आप समानता लाने के लिए करेंगी। ताकि परिवार में काम के भेदभाव में समानता आ सके। घर के काम का बोझ केवल बहु, बेटी या आप पर ही न रहे बल्कि आपके बेटे और पति में भी जिम्मेदारी का भाव जागे। औरत और आदमी के काम के बीच की लक्ष्मण–रेखा को मिटाने के लिए एक छोटी सी पहल करें।
- ✓ शुरूआत बहुत कठिन काम से न करे। ऐसा काम ले जो कर सके। जैसे – अपने बेटों को घर का काम करने के लिए प्रेरित करें। खाली कहकर ही नही उसके पीछे की सोच भी बताएं ।

'जो प्यार से भरा है वही तो परिवार है' इस गीत के साथ सत्र समाप्त करे।

बैठक चक्र - २

सत्ता और पितृसत्ता

दिन 1– महिला पर समाज के बन्धन
दिन 2– सत्ता की दौड़
दिन 3– हिंसा अब और नहीं !

सत्ता और पितृसत्ता

उद्देश्य :

- ✓ समाज ने औरत पर क्या क्या बन्धन डाले है?
- ✓ सत्ता और पितृसत्ता को समझना
- ✓ महिला हिंसा के प्रकारों की जानकारी

चर्चा के लिए माहौल और आवश्यक सामान :

- ✓ एक कमरा जंहा 20 से 25 महिलाऐं गोल में बैठ कर खुल कर चर्चा कर सकती हो ।
- ✓ 1 मीटर के 20–25 रिब्बन या रस्सी।
- ✓ पिक्चर कार्ड
- ✓ समूह आंकलन के फार्मेट

समय : प्रति दिन 2:30 घंटा

पहला दिन

महिलाओं पर समाज के बन्धन

गतिविधीः दोहराना

प्रक्रिया :

1. सभी सदस्यों को अब तक इस पाठशाला के नियम समझ आने लगे होगें– जैसे समय पर आना, गोल में बैठना, सीखे और सीखाऐं, सवाल करना, दोहराना।
1. गोल में बैठना, चर्चा में समय पर आना, विषय को समझना, खुद अगुआई करना व कम बोलने वाली सदस्यों को आगे लाने के प्रयास करना। नियम को फिर से दोहराएं।
2. पिछली बैठक में बताए गए जेण्डर और लिंग को दोहराने के लिए कुछ सवालों के जरिए सदस्यों का टेस्ट लें। सबसे पहले सभी सदस्यों को कमरे के बीचों बीच खड़े होने को कहे।
3. सदस्यों को पहला वाक्य सुनाएं – 'महिलाऐं खाना अच्छा बनाती है।' अब उनसे पूछें कि जिन सदस्य को लगता है कि वाक्य 'जेण्डर' बताता है वो सदस्य कमरे के दायी ओर आ जाए और जिन सदस्यों को लगता हे कि ये वाक्य लिंग यानि प्राकृतिक अन्तर से जुड़ा है वो बाई ओर आ जाए और जिन्हें दोनो लगता है वो बीच में आ जाए। जब सभी अपने जवाब दे चुकी हो तो सही जवाब बताए। महिला पुरूष दोनो ही अच्छा खाना बना सकते है। ये समाज का बनाया अन्तर है इसीलिए जेण्डर है।
4. इसी तरह से बाकि वाक्य भी पूछें।

इस सत्र को इस नारे के साथ दोहरा कर समाप्त करे–

प्रकृति ने दिया है केवल लिंग का अन्तर
समाज ने बनाया जो भेदभाव, वो है जेण्डर

क्र0	वाक्य	लिंग	जेण्डर	दोनो
1	महिलाऐं खाना अच्छा बनाती है।		√	
2	महिला हल नही चला सकती है।		√	
3	मर्द को दर्द नही होता।		√	
4	औरतों के बाल लम्बे होते है।		√	
5	औरतें बच्चों की देखभाल अच्छे से करती है।		√	
6	मर्द की दाढ़ी मुछें होती है।	√		
7	माहवारी के समय लड़कियों को रसोई में नही आना चाहिए।		√	
8	मां बच्चों को दूध पिला सकती है। (यंहा स्तन नही लिखा है।)		√	
9	बेटा वंश को आगे बढ़ाता है		√	
10	घर का मुखिया आदमी होता है।		√	

गतिविधीः – महिलाओं पर समाज के बन्धन

उद्देश्य : महिलाओं पर समाज द्वारा लगाए गए बन्धनों और उसके कुप्रभावों को समझना।

सामग्री : 1 मीटर के 20–25 रिब्बन (रिब्बन न मिलने पर रस्सी के टुकड़े, गमछे या दुपटटे)

प्रक्रिया :

1. रिबन या रस्सी के टुकड़ों को बीच में रख दें। ग्रुप में से किसी सदस्य को जो देर तक खड़ी हो सकती हो, उनको बीच बुलाऐं। सबसे प्रश्न पूछा जाए 'लड़की या औरत होने के नाते बचपन से लेकर अभी तक आपके ऊपर कौन–कौन सी पाबंदियाँ लगाई गईं?'
2. एक–एक सहभागी बीच में आयें और किसी एक पाबंदी के बारे में कहें। बीच में खड़ी औरत के शरीर के उस हिस्से के उपर रस्सी बाधें जिससे वो पाबंदी जुड़ी हुई है। – जैसे शादी के बाद मन से मायके आ जा नही सकती, औरत ज़मीन पर हल नही चला सकती तो हाथ पैर पर रस्सी बाधें, अपनी मां को रूप्ए नही दे सकती, खुल कर बात नही कह सकती, खुलकर हँस नही सकती तो मुंह पे रस्सी बांधें, माहवारी के समय मंदिर नही जा सकती तो पैर के ऊपर बाधे इत्यादि। इस तरह के उदाहरण महिलाएँ अपने जीवन से देंगी। कुल मिलाकर उस औरत का पूरा शरीर बँध जाएगा।

चर्चा के लिए सवालः

जिन सहभागियों ने रस्सी बांधी थी वो आकर उसे खोलें और बताएँ कि किस कारण रस्सी बांधे थी। ये भी जोड़ें कि वो अपनी जिन्दगी में क्या कुछ बदल पायेगीं? बंधी हुई औरत से पूछें आपको कैसा महसूस हो रहा है? बाकी सदस्यों से पूछें इनको देखकर आपको कैसा लग रहा है? वो कौन है? क्या सही में औरतों की स्थिति ऐसी है? है तो क्यों? औरत के ऊपर इस तरह के नियंत्रण करके किन लोगों को फ़ायदा होता होगा? ज़्यादातर कन्ट्रोल किस तरह के हैं यानि सिर्फ़ शरीर पर या मन पर भी, इच्छाओं पर भी, विचारों पर भी? क्या इस तरह के बंधन हर धर्म, जाति, तबके और उम्र की औरत पर समान रूप से लागू होते हैं? क्या हम इस तरह से बंधें रहना चाहते हैं?

चर्चा को समेटनाः

रिबन या रस्सी के टुकड़े एक पूरी व्यवस्था के भाग हैं। समाज में प्रचलित कायदे–कानून, रीति–रिवाज़ आपस में गुँथे हुए हैं, अलग–अलग नहीं हैं। वे एक पूरी व्यवस्था का हिस्सा हैं, औरत को काबू में रखने के लिए–ये स्पष्ट करें। 'तोड़ तोड़ के बन्धनों का .....'के साथ सत्र का अन्त करें।

दूसरा दिन

सत्ता की दौड़

गतिविधि 1 – 'सत्ता की दौड़'

उद्देश्य : सत्ता को समझना

प्रक्रिया:

1. सबसे पहले एक खुली जगह का चुनाव कर ले पर जंहा ज्यादा लोग आते–जाते न हो।
2. सभी सदस्यों को एक लाइन से खड़ा कर दे जैसे रेस होने जा रही हो एसे। उनको बताए कि ये जिन्दगी की रेस है।
3. सामने लगभग 30 मी पर एक लाइन बना दें वह सुख–समृद्धि है वहां तक पंहुचने की लालसा सबकी है पर जो जल्दी पहुचेंगा वो ज्यादा पाएगा। सबको बताएं कि सभी को एक–एक रोल दिए जाएगे और उनको उन्ही रोल के हिसाब से चलना होगा उनके हिसाब से निर्णय लेने है।
4. जैसे जिन्दगी में सुख–दुख के अवसर आते यहा भी आएगें। आपको अवसर सुनाए जाने पर आप 3 चाल में से एक चाल चल सकते है–
    1. आगे कदम बढ़ाएंगें (आगे 1 कदम बढ़ा सकते है)
    2. पीछे कदम बढ़ाएगें (1 कदम पीछे जा सकते है)
    3. अपनी जगह खड़े रहेगें

जैसा हाल आपको मिले रोल/पात्र का बताए गए अवसर पर होता वैसे अगर अवसर से उस व्यक्ति को फायदा होगा तो एक कदम आगे बढ़ाए, अगर नुक्सान होता हैं तो कदम पीछे अगर कोई फर्क नही पडता तो वही खड़े रहे।

5. अब एक–एक कर हर सदस्य को निम्न में से एक पात्र दे–
    1. कमल –एक 20 एकड़ का धनी पुरूष पण्डित किसान
    2. कमला बाई– कमल पण्डित किसान की पत्नी, जिसकी 4 बेटियां है।

3. सुकल सिंह–एक 50 एकड़ का धनी पुरूष गोण्ड किसान
4. रमली बाई– एकल विधवा मजदूर, जो भूमिहीन है और मजदूरी करके अपना परिवार चलाती है।
5. गंगू सिंह– एक पैर से अपाहिज, दलित पुरूष जो अपने भाई के साथ रहता है।
6. सरस्वती बाई– 22 साल की महिला जो चल फिर नही सकती, और भाई–भाभी के साथ रहती है।
7. सुरेश–गांव का सचीव, जिसने दो शादियां की है।
8. राम बाई– सुरेश की पहली पत्नी जिसके बच्चे नही है।

अब खेल का एक डेमो करे जैसे–

1. अवसर–इस बार बहुत अच्छा मौसम रहा और बम्पर फसल पैदा हुयी ।

इस अवसर पर जिन सदस्य को फायदा होगा वो आगे 3–4 कदम बढ़ सकते है जो सदस्य भूमिहीन है वो अपनी जगह खड़े रह सकते है। इसी तरह का निर्णय लेंगें।
अब खेल शुरू करे।
अवसर के वाक्य–

1. इस बार बहुत अच्छा मौसम रहा और बम्पर फसल पैदा हुयी ।
2. गांव में सुखा पड़ा है।
3. इस बार शासन ने किसानों को मुफत में बीज बांटा।
4. गांव के पास अंग्रेजी दारू की दुकान खुल गई है और ज्यादातर पुरूष पीने लगे है और अपनी पत्नियों को मारने लगे है।
5. इस साल गांव में सरपंच व सचिव के आपसी विवाद की वजह से एक भी काम नही खुला।
6. सरकार ब्लाक में किसानी के उपकरण बांट रही है और उनको नई जानकारी भी दे रही है।
7. गांव में मलेरिया फैल गया है, गरीब लोग ठीक से इलाज नही करा पा रहे है।
8. सरकार ने किसानों के कर्ज माफ कर दिए।
9. गांव में बड़ी पूजा रखी गयी है जिसमें विधवा और बांझ महिलाओं का आना मना है।
10. गांव की बाज़ार की दिन है। आमतौर पर कौन कौन आसानी से बिना किसी रोकटोक के हाट जा सकते है।

11. गांव में एक संस्था आके सभी को अपने कार्यों और उससे मिलने वाले लाभ सभी बताके समिति बनाने के लिये प्रेरित कर रहा है। कौन कौन बिना किसी से पुछे अपनी मर्ज़ी से उसमे नाम लिखा सकते है?
12. पुरे दिन में किन किन को आराम करने की फुरसत रहती है?
13. कौन कौन साल भर तीनों वक्त भर पेट खाना खाते है
14. गांव में समाज की पंचायत लगी है कौन कौन भाग ले सकते है?
15. किस–किस को घर में अक्सर तानें सुनने पड़ते है।

अन्त में कुछ ही सदस्य सुख–समृद्धि तक पहुंच पाएगें । इस पूरे अनुभव पर चर्चा करें।

चर्चा के लिए सवालः

1. सबसे आगे खड़ी महिला से पूछिए वो कौन है, और उनको कैसा लग रहा है?
2. फिर जो दूसरे नम्बर पर खड़ी हैं उनसे वही बात पूछिए। – उसी तरह जो सबसे अंत में खड़ी हैं, उनसे पूछिए वो कौन हैं और उनको कैसा महसूस हो रहा है। देखिए और समझाइए कि कैसे अलग–अलग भूमिकाओं वाले स्त्री–पुरुष एक–दूसरे से कितनी दूरी पर खड़े हैं और ऐसा क्यों है? किसी उदाहरण में अगर ब्राह्मण स्त्री दलित पुरुष के पीछे है, तो ऐसा क्यों है?

चर्चा को समेटनाः

घर समाज में किसके पास ज़्यादा सत्ता या ताक़त है और क्यों है और कैसे ज़िन्दगी के हर पहलू से जुड़ती है। कैसे समाज द्वारा तय की गई जेंडर और जाति की भूमिकाएँ सत्ता–सम्बंधों को तय करती हैं। जो ऊँची जाति का है, जो अमीर है और जो पुरुष है वो सबको अपने से नीचा समझता है। ये स्पष्ट करें कि सत्ता का खेल सब जगह चलता है और इसकी विचारधारा एक ही है – दूसरे को कन्ट्रोल या नियन्त्रण करना और खुद का राज चलाना।

- सत्ता का मतलब–

  दूसरों को प्रभावित, नियन्त्रित या कन्ट्रोल करना ।

- क्या हमेशा पहचाना जा सकता है कि सत्ता किसके पास है ?

कभी कभी सत्ता सामने दिखती है पर कभी कभी सामने नही दिखती। जैसे– कोई डांट कर अपनी पावर दिखा सकता है कोई सिर्फ़ चेहरे के भाव से। या जैसे सरपंच पत्नि हो पर असली कमान पति के हाथ में। जैसे सास बहु पर रौब जमाते दिखती हो पर असल में कमान ससूर के हाथ में हो या मां बेटी पर रोक–टोक करते दिखती हो पर असल में पिता उन्हें ऐसा करने को कहते हो।

- सत्ता पैदा कैसे होती है उसका स्रोत क्या होता है ?
  सत्ता के स्त्रोत हैं – आर्थिकः पैसे की ताकत, शारिरिकः पुरूष होने की ताकत, ताकतवर होना, सामाजिक व राजनैतिकः जाति और वर्ग में स्थान, ओहदे की ताकत, रसूकदारों से रिश्ते, राजनीति में पैठ, वैयक्तिकः वैयक्तिक करिश्मा, रिश्तों और उम्र में स्थिति, शहर का या शिक्षित होना आदि।
- क्या सत्ता बुरी ही होती है ?
  नही । क्या आग बुरी होती है ? सही मात्रा में आग चूल्हा जला सकती है उजाला कर सकती है पर बेलगाम आग सब कुछ जला सकती है। वैसे ही सत्ता बुरी नही होती उसका उपयोग गलत काम में भी हो सकता है और अच्छे कामों में भी। जैसे समूह चलाने में भी और समूह तोड़ने में भी। सत्ता या ताक़त के कई रूप होते हैंः
    - ख़ुद के अन्दर की ताक़त
    - साथ सहयोग की ताक़त
    - दूसरों पर नियन्त्रण की ताक़त

हरेक के सकारात्मक या नकारात्मक इस्तेमाल हो सकते हैं। परन्तु मुख्य रूप से दूसरों पर नियन्त्रण या कन्ट्रोल करना ही अधिकतर स्थितियों में नकारात्मक होता है। बाकी दो ताकतें सशक्तिकरण कर सकती हैं।

गतिविधि 2 – 'पितृसत्ता का जहरीला पेड़

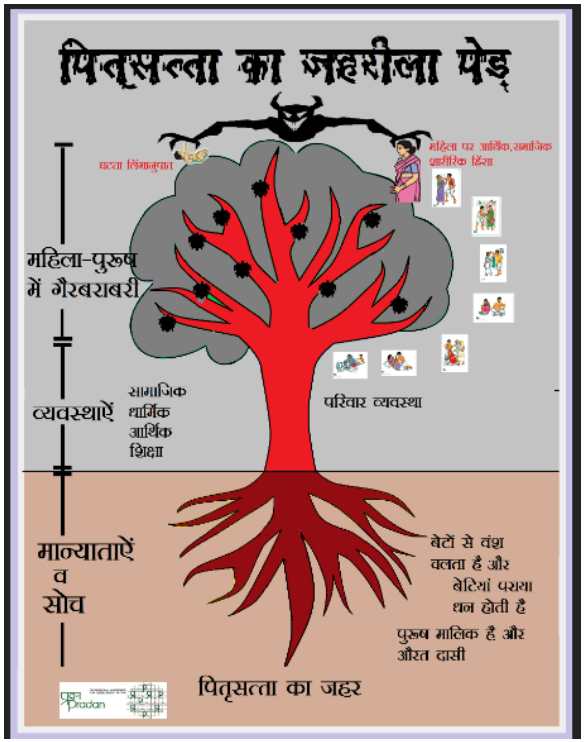

उददेश्य– पितृसत्ता क्या है इसको समझना

प्रक्रिया:

1. सबसे पहले सदस्यों को पितृसत्ता शब्द का मतलब बताए–
   पितृसत्ता = पितृ यानि पिता (यानि पुरूष) + सत्ता यानि पुरूष की सत्ता।
   पितृसत्ता एक सोच है जिसके अनुसार : पुरुष ही परिवार और समाज का मुखिया होता है। घर–परिवार, धर्म–राजनीति, सभी क्षेत्रों में पुरुष की ही चलनी चाहिए। औरत पुरूष की दासी है जिसकाह अपने शरीर, सम्पत्ति, सोच बच्चों–किसी पर हक़ नहीं होता। पितृसत्ता सामाजिक ढाँचों और रिवाजों, सोच और मूल्यों की व्यवस्था है जिसमें महिला को पुरुष के अधीन समझा जाता है।
   पितृसत्ता समाज, परिवेश, समय, इतिहास इत्यादि के अनुसार ख़ुद को ढालती रहती है।

2. पितृसत्ता को एक जहरिले पेड़ के उदाहरण से समझा जा सकता है।
   - पेड़ की जड़ : पितृसत्ता की सोच और मान्यताएं है जो मानती है कि पुरूष ही मुखिया है और औरत उसकी सम्पति। लडके ही है जो वंश चलाते है लड़किया तो पराया धन है।
   - पेड़ के मजबूत तने : संस्थाऐं और व्यवस्थाऐं इस पेड़ के मजबूत तने है जिनके जरीए पितृसत्ता धर्म, समाज, शिक्षा व आर्थिक संस्थानों के जरीए कायम रहती है और फलती–फूलती है। और सबसे अहम भूमिका है परिवार संस्था कि जिसके जरीए पितृसत्ता, महिलाओं पर दिन–रात अपना नियन्त्रण बनाएं रखती है।

- फल और पत्तियां : मौलिाओं और लड़कियों के साथ होने वाली गैर–बराबरी, अलग अलग तरह की हिंसा– शारिरिक, मानसिक, आर्थिक, बौद्धिक और यौनिक।

चर्चा को समेटना:

सदस्यों से सवाल पूछें कि पितृसत्ता का उल्टा क्या होगा, मातृसत्ता?
नही बल्कि मानवता– प्यार समानता और न्याय पर आधारित समाज । मातृसत्ता भी उतनी ही बुरी है जितनी की पितृसत्ता। हम अंग्रेजो से तो आजाद हो गए पर अपने समाज के अन्दर के इस कैद से आजाद कर पाएं है जिस की वजह से आज भी महिलाएं खुलकर आजादी की जिन्दगी नही जी पा रही है। वक्त आ गया है कि हम अपने घरों को इसकी जकड़ से आजाद करे। घरों को समाज को नियंत्रण की सत्ता से नही प्यार और प्रजातान्त्रिक तरीके से चलाए। समानता के खुशहाल पेड़ के दिखाते हुए चर्चा करें और गीत के साथ सत्र का अन्त करे।

गीतः धीरे –धीरे आई हममें चेतना .....गाकर समाप्त करें।

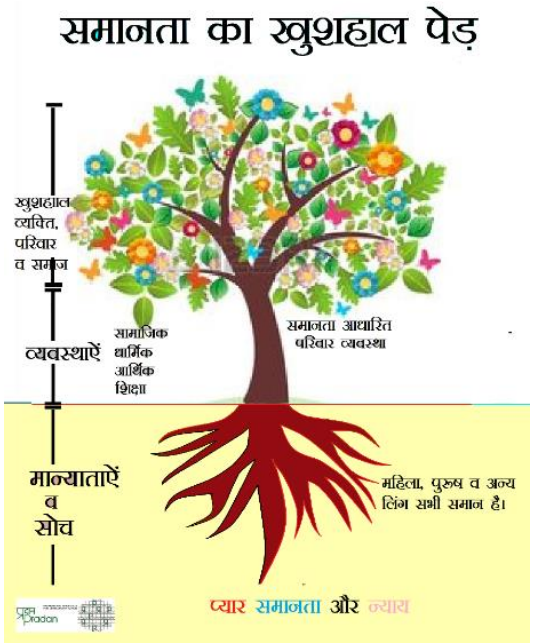

दूसरा दिन

हिंसा अब और नही !

गतिविधि 1 – फूल और कांटे

उद्देश्य : औरत होने के नाते खुद पर हो रहे भेदभाव व हिंसा को पहचानना।

सामग्री : हर प्रतिभागी के लिए 3 से 4 फूल और 5 से 6 कांटे

प्रक्रिया :

1. सभी प्रतिभागियों को 3 से 4 फूल और 5 से 6 कांटे इकटठा करने को कहे (अगर फूल न मिले तो पत्ति व पत्थर) और फिर गोला बनाकर बैठने को कहे। गोले के बीच में सभी फूल व कांटों को रख दे। अब उनसे कहे कि– महिला होने के नाते उनके जीवन में आए सुख और दुख को सोचें। और हरेक सुख के लिए फुल और दुख के लिए कांटा अपने सामने रखे। अब प्रतिभागियों को कहे कि उनके जीवन में आए सुख और दुख को एक–एक करके बताए।
2. एक बात का ध्यान रखे कि सूखा, मृत्यू व बिमारी के दुख तो सभी के साथ लगे है इनको फिलहाल के लिए छोड़ दे। याद रखे कि एक महिला होने के नाते जो सुख दुख आऐ हो उन पर ध्यान दें।
3. जब सभी प्रतिभागी अपने सुख–दुख बता ले तो सहजकर्ता दुखों को यानि कांटों को इकटठा करले और उसे महिला पर होने वाले अलग अलग प्रकार की हिंसा से जोड़कर अगली गतिविधी में बताए।

चर्चा को समेटना:

हिंसा क्या है, अगली गतिविधी के साथ जोड़ते हुए चर्चा को आगे बढ़ाऐं।

गतिविधी 2 – 'महिला–हिंसा के प्रकार'

उद्देश्य : महिला हिंसा के प्रकार को समझना।

सामग्री : पिक्चर कार्ड

प्रक्रिया :

1. ग्रुप को हिंसा के बारे में बताएं कि हिंसा कितने प्रकार की होती है–
2. औरत पर होने वाली हिंसा के कई रूप हैं। कुछ तो दिखते हैं जैसे मार–पिटाई, बलात्कार, छेड़खानी आदि। लेकिन और कई तरह की हिंसा है जो दिखाई नहीं पड़ती पर गहरे घाव छोड़ जाती है, जैसे ताने कसना, रोक लगाना या इच्छाओं को कुचल देना। इसके अलावा रोज मर्रा में होने वाली हिंसाएं जिन्हें हम अक्सर भेदभाव कहते वो हमें हिंसा ही नही लगते जैसे– बहुओं और घर की महिलाओं का बाद में खाना खाना, बेटियों को पढ़ने, खेलने व रोजगार के अवसर न देना, उनकी सम्पति का हक मार कर बेटों को दे देना।
3. हिंसा 5 प्रकार की हो सकती है :

शारीरिक हिंसा	शरीर पर होने वाली हिंसा	काम का बोझ, आराम के कम मौके देना, भूखा रखना, दहेज़ के लिए जलाना, स्वास्थ्य सेवाएं न लेने देना, मार–पिटाई आदि।
मानसिक हिंसा	मन/भावनाओं पर होने वाली हिंसा	डांट, धमकी, ताने देना, माहवारी होने पर या विधवा को शुभ काम में न जाने देना, मन की न करने देना, बदनाम करना, औरों से मिलने न देना, कपड़ों पर, आने जाने पर रोक–टोक आदि।

आर्थिक हिंसा	धन और संसाधनों से जुड़ी हिंसा	अक्सर मर्द से कम मजदूरी या वेतन मिलना, जायदाद में हिस्सा न देना, आगे पढ़ाई या ट्रेनींग के लिए पैसा न लगाना, रोजगार के अवसर न देना, खुद पर खर्च न करने देना।
बौद्विक हिंसा	बुद्धि / दिमाग पर होने वाली हिंसा	जैसे–मर्द की तुलना में कम अक्ल समझना, पढ़ने न देना, जानकारी के अवसर न देना, ट्रेनींग और बैठकों में जाने से रोकटोक खासकर, निर्णय में भाग न लेने देना, जैसे बहु व व्यस्क बेटियों को ग्राम सभा में अपने विचार बताने को अच्छा नही माना जाता।
यौनिक हिंसा	यौनिकता से जुड़ी हिंसा	जैसे– छेड़छाड़, बलात्कार, (पति द्वारा भी)।

4. इस विषय पर और गहरी समझ बनाने के लिए– कार्ड की मदद से दोहराएं । एक–एक करके कार्ड दिखाऐं और पूछे कि इस चित्र में क्या हो रहा है। क्या ये हिंसा है? ये किस प्रकार की हिंसा है?
5. बैठक के बीच की जगह जमीन पर 5 स्थान चिन्हित कर लें और एक प्रकार की हिंसा से जुड़े कार्ड को एक खाने में रखें।
6. इसी प्रकार से सभी कार्ड पर चर्चा करें। और उसमें दिखाई गयी हिंसा के हिसाब से उस कार्ड को, उसी हिंसा के प्रकार की जगह पर रखें।
7. ऐसा हो सकता है कि एक हिंसा 1 से अधिक प्रकार में रखी जा सकें। पर महिलाओं को चित्र, प्रमुखतः जिस हिंसा जैसा लगे कार्ड को उस खाने में रखने को कहें।

चर्चा के लिए सवालः

सारे कार्ड दिखने के बाद कुछ और सवालों के जरिए समझ को बढ़ाए जैसे–

- इन में से कौन कौन सी हिंसा घर में होती है और कौन सी बाहर?
- कौन–कौन सी हिंसा आपके साथ हुई है?

- पुरूषों पर होने वाली हिंसा और महिला हिंसा में क्या फर्क हैं?

चर्चा को समेटना:

- ✓ फूल–कांटें गतिविधी में बताए गऐ उनके खुद के अनुभवों को भी इस चर्चा से जोड़े। पूछें कि आखिर महिला पर ये हिंसा क्यों होती है?
- ✓ सवाल का जवाब आने दे फिर जोड़ें कि पहली गतिविधी बन्धन की 'रस्सियां' अलग अलग प्रकार की हिंसा ही तो थी, जो पितृसत्ता ने महिला को कन्ट्रोल में रखने के लिए बनाई गयी। और ये हिसा अजनबी ही नही करते बल्कि अपने भी करते है और ज्यादातर अपने ही करते।
- ✓ थोड़ा विराम देकर सदस्यों की भावनाओं को बाहर आने दे। इस विषय को अपनी जिन्दगी से जोड़कर देखने का माहौल बनाए। अपने आप अगर न बोल रही हो तो सवालों से प्रेरित करे।

दोहराए

ऐसा कोई भी व्यवहार जिसके कारण महिला शारिरिक, मानसिक, आर्थिक, बौद्विक या यौनिक रूप से आहत होती हैं, महिला–हिंसा के अन्तर्गत आता है। किसी भी इन्सान को अगर बार–बार नीचा दिखाया जाए व प्रताड़ित किया जाए तो क्या होगा? पहली चीज़ उसका आत्मविश्वास कमज़ोर हो जाएगा, ख़ुद की छवि और आत्मसम्मान ख़त्म हो जाएंगे। अक्सर अच्छी–खासी पिटाई खाई महिलाएँ कहती हैं 'मुझसे कोई ग़ल्ती हो गई होगी।' लगातार हिंसा सहन करती औरत खुद को ही गुनहगार समझने लगती है। 'तुम्हें तो कुछ आता नहीं, बताने का फ़ायदा ही क्या है' – इस तरह की बातें सुन–सुन के उसे लगने लगता है कि सच में उसके पास दिमाग कम है। यन्त्रणा और अपमान इन्सान के वजूद को रौंद डालते हैं। भय और कुंठा व्यक्तित्त्व का हिस्सा बन जाते हैं।

शारीरिक हिंसा

Card 1.png

Card 3.png

Card 12.png

मानसिक हिंसा

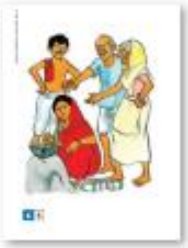

Card 4.png

Card 2.png

बौद्धिक हिंसा

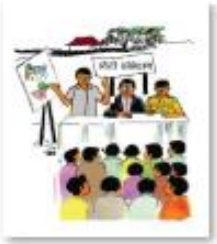

Card 5.png

Card 7.png

आर्थिक हिंसा

Card 8.png

Card 10.png

Card 11.png

यौनिक हिंसा

Card 6.png

Card 9.png

गतिविधि 3– बदलाव के कदम

प्रक्रिया:

काम के बोझ के बंटवारे में बदलाव ही क्यों?–सहजकर्ता इसके बारे में बताऐं। वैसे हरेक सदस्य अलग–अलग विषय भी ले सकते थे या हरेक समूह भी, पर एक ही विषय लेने से, एक दूसरे की चुनौतियों से सीख पाएगें, मानीटर कर पाएगें और धीरे–धीरे एक बड़े क्षेत्र में बदलाव ला सकना आसान होगा। संगठन के लिए सफलता भी जरूरी है काम का बंटवारा, सम्पति या अन्य बदलाव की तुलना उतना जटिल नही है। अपने से बड़ों पर भले ही महिला अपना प्रभाव न डाल पाए मगर अपने से उम्र के छोटे परिवार के सदस्यों जरूर प्रेरित कर सकती है। पितृसत्ता की जड़े बहुत गहरी है । इसलिए एक ही विषय ले कर मिलकर उस पर प्रहार करना ज्यादा कारगर होगा।

तीन दिन की चर्चा को समेटना :

- ✓ दोहराव करें : सदस्यों से पूछे कि तीन दिन में उन्हों ने क्या क्या गतिविधी की। और उनमें क्या क्या सीखा?
- ✓ केवल समझ बन जाने या चर्चा करने से स्थिति नही बदलेगी अगर हम चाहते है कि हमारा घर–परिवार और गांव–समाज विभिन्न प्रकार की हिंसा से मुक्त हो तो बदलाव के लिए कुछ कदम बढ़ाने होगें। इसके लिए खुद से ही शुरूआत करनी होगी।
- ✓ तो क्या आप खुद में बदलाव के लिए तैयार है? फिलहाल के लिए एक प्रकार का बदलाव लेते है।
- ✓ पिछली मीटिग–साइकिल के बाद आपने अपने घर में काम के बोझ के बंटवारे में बदलाव विषय पर कुछ पहल की ? उसी की प्रगति पर चर्चा करें। फोलो–अप करें।

समुहवार चर्चा की योजना बनाना :

- ✓ सभी सदस्यों को अपने–अपने समूह में जाकर बैठने का दिन तय करने को कहे, जिस दिन सहजकर्ता भी जाएगी।
- ✓ समूह में चर्चा के इस चरण में फार्मेट के आधार पर समूह की अभी की स्थिति का आंकलन करना है। और फिर आगे की योजना बनाना।
- ✓ गीत – 'चलें मिल के.....'के साथ चर्चा समाप्त करें।

बैठक चक्र - 3

महिलाएं और नागरिकता

सत्र 1– क्या हम नागरिक नहीं !
सत्र 2– जिम्मेदार नागरिक और संविधान
सत्र 3– हमारे गांव में हम भी सरकार

महिलाऐं और नागरिकता

उद्देश्य :

- ✓ जेण्डर बराबरी लाने के लिए राजनीति में या निर्णायक भूमिकाओं में आना लड़कियों और महिला के लिए क्यों जरूरी है, इस बात को समझना
- ✓ भारत के संविधान के बारे में जानकारी बढ़ाना
- ✓ लोकतन्त्र की ताकत समझना और गांव के आजीविका विकास में नागरिकों की भागीदारी के महत्व को समझना

चर्चा के लिए माहौल और आवश्यक सामान :

- ✓ **एक स्थान जंहा 20 से 25 महिलाऐं गोल में बैठ कर खुल कर चर्चा कर सकती हो ।**

समय :

प्रति दिन 2 से 2:30 घंटा

पहला दिन

क्या हम नागरिक नही!

गतिविधी 1–सवालों के घेरे में (सोश्योग्रामी)

प्रक्रिया :

- ✓ सहजकर्ता दोहरने के लिए महिलाओं से पूछें कि पिछले बैठक चक्र में क्या हुआ था।
- ✓ सवालों के घेरे में (सोश्योग्रामी) : इस गतिविधी में महिलाओं को पूरे कमरे की जगह का उपयोग करते हुए घुमने के लिए कहेंगें और सवाल पूछे। सदस्यों को सवाल करते हुए अलग अलग ग्रुप में बांटे। और उनका इसी ग्रुप में होने के कारणों के बारे में पूछे। यानि किस वजह से वो इसी ग्रुप में खड़ी है। एक महिला को ग्रुप के आंकड़ों को लिखने को कहे, बड़ा बड़ा लिखे ताकि अन्य पढ़ी–लिखी महिलाऐं भी पढ़ सकें। पहले सरल से सवाल पूछकर प्रैक्टिस कराएं जैसे कितनी महिलाऐं अपने पति का नाम बोलती है?, सवाल :
  1. कितनी महिलाएं खुद को नागरिक समझती है वो एक तरफ आ जाए ?
  2. कितनी महिलाऐं अपने सरपंच और पंच का नाम जानती है ?
  3. कितनी महिलाओं को घर में बहस करने पर डांट पड़ी ?
  4. कितनी महिलाऐं शाादी से पहले अपने मायके की ग्रामसभा में गई थी?

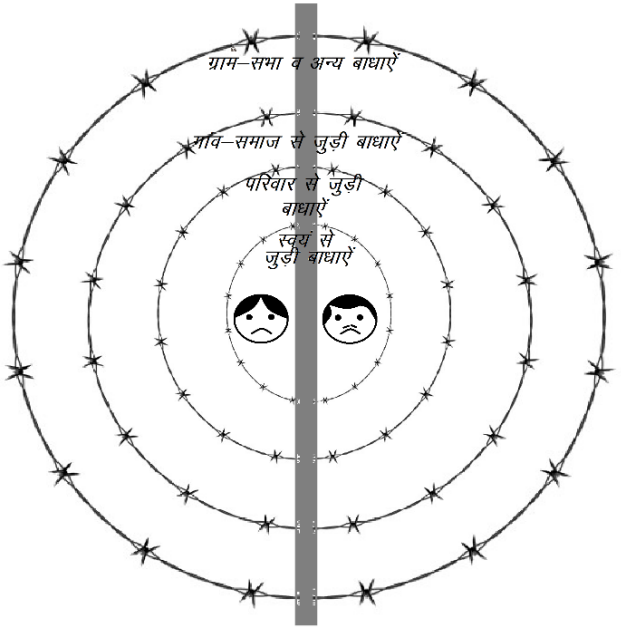

5. कितनी महिलाओं ने वोट अपने मन से दिया और कितनों ने अपने घरवालों की मर्जी से ?
6. कितनी महिलाओं ने अपना कोई काम ग्रामसभा से करवाया है ?
7. कितनी महिलाओं ने किसी अन्य महिला का कोई काम ग्रामसभा से करवाया है ?
8. कितनी महिलाऐं नियमित ग्राम सभा में जाती है ?
9. कितनी महिलाओं का परिवार उन्हें ग्राम सभा में भाग लेने के लिए सहयोग करता है ?
10. और उनमें से जो महिलाऐं सक्रीय रूप से चर्चा में भाग लेती है वो एक तरफ हो जाएं?

चर्चा को समेटना :

सहजकर्ता महिलाओं से सोशियोग्रामी से निकली बातों को और उनके जवाबों को समेटकर सामने रखें। सवाल करके उनके अर्न्तमन को झकझोरेगें कि–

- ✓ गांव में अनुमान से कुल कितनी महिला वोटर होंगी और उनमें से कितनी महिलाऐं है जो ग्राम सभा में जाती है?
- ✓ क्या 18 से 30 साल के अन्दर की लड़कियां और महिलाऐं ग्रामसभा में जाती है या सक्रीय रूप से चर्चा में भाग लेती है ?
- ✓ उन चुनौतियों और वजहों को एक–एक करके सूची बनाऐं जिनकी वजह से गांव की सभी लड़कियां व महिला वोटर, ग्रामसभा में भाग नही ले पाती है ? महिलाओं को उन वजहों को बताने के लिए प्रेरित करें। सहजकर्ता अपनी सहयोगी सदस्य को इनको एक–एक पर्ची पर लिखते जानें को कहें। जितनी पर्चीयां है उतने पत्थर चुन कर रख लें। अब बीच में चार घेरे में गोले बना लें, पहला घेरा–स्वयं की सोच से जुड़ी वजहें, दूसरा–परिवार की चुनोंतियां, तीसरा घेरा–गांव समाज का, चौथा– ग्राम सभा से जुड़ा या अन्य। एक एक पर्ची को पढ़ें और जिस खाने में उस पर्ची को रखते जाऐं और पत्थर से दबाते जाए। पत्थर को चुनौतियां का रूपक मानते हुए बाद में चर्चा करें कि कैसे एक लड़की को परिवार व समाज, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीकों से ग्राम सभा में जाने से रोकता है।
- ✓ अब जेण्डर गैरबराबरी को और उभारने के लिए इसी प्रकार से पूछें कि कौन कौन सी चुनौतियों का सामना आपके घर के पुरूषों को करना पड़ता है क्या औरत और पुरूषों की चुनौतिंया एक है अगर नही तो क्यों?

गतिविधी 2–केस चर्चा

प्रक्रिया :सभी महिलाओं को ये केस सुनाऐं। ये केस सच्ची घटना पर आधारित है पर नाम बदलें हुऐं है।

राजनीति महिला के बस का काम नही

रमली को समझ मे नही आ रहा था कि आखिर उसके साथ ही ऐसा क्यों हुआ?

रमली भाई बहनों में सबसे बड़ी थी। पांचवी से ज्यादा नही पढ़ पाई। बचपन घर और खेत के काम में बीता, सो उसे ये काम अच्छे से आ गये। गांव में कोई लड़की कभी ग्रामसभा नही जाती थी, उसे पता भी नही था कि आखिर वंहा होता क्या है। 15 साल की उम्र में ही उसकी शादी हो गई। ससुराल में आकर सब की सेवा करने, घर और खेत के काम में ही ज्यादा समय बितने लगा। छः साल पहले उसे जानकारी मिली कि महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए गांव की महिलाऐं समूह में जुड़ रही है सो वो भी जुड़ गयी। धीरे–धीरे समूह के काम में उसका खुब मन लगने लगा और महिलाऐं भी उसे खुब पसन्द करने लगी। इसी दौरान पंचायत चुनाव का समय आया। रमली का पति दुकानदार था। रमली के ससूराल वालों और पति ने मन बनाया कि सरपंच के काम में बहुत कमाई है और महिला समुहो में रमली काफी लोकप्रिय भी है, सो क्यों न रमली को चुनाव मे खड़ा कर दिया जाए। उधर महिला समुहों में भी महिलाओं के राजनैतिक सशक्तिकरण पर बात चल रही थी। रमली तैयार नही थी। उसे सरपंची के काम का कुछ भी अन्दाजा नही था। पर उसके पति ने खुब समझाया और आखिरकार राजी कर दिया। पति ने दो लाख लगाकर चुनाव मे खड़ा किया, गांव मे दारू, मुर्गा खिलाकर लोगो को राजी किया और उधर समूहों ने भी रमली का प्रचार प्रसार किया। आखिरकार रमली चुनाव जीत गई।

कुछ दिन बहुत खुशी के साथ गुजरे। घर वाले भी खुश थे और समूह की महिलाऐं भी। पर फिर चुनौतियों के दिन शुरू हुए। आज यंहा बैठक, कल वहां, पति भी व्यस्त था, कहां–कहां साथ जाता सो रमली सचिव केशव के साथ उसकी मोटरसाइकिल पर बैठकर बैठकों मे आने जाने लगी। रमली का पति उस पर शक करने लगा। वो कहां जा रही हैं, किसके साथ जा रही हैं, पूरी नजर रखता है। कम पैसा कमाती तो डांटता कि मैने तुझे पैसा कमाने के लिए सरपंच बनाया है। एक बार घर पर ननद का परिवार आया था तो उसने रमली को बैठक में भी नही जाने दिया। कई बार जनपद की बैठकों में भी उसकी प्रगति ठीक नही आती तो आफिसर डॉटते कि पता नही क्यों सरकार ने इन महिलाओं को सत्ता में लाकर हमारे सर बैठा दिया है, कुछ आता जाता है नही। समूह की महिलाएं भी धीरे धीरे दूर होती गई। कई बार रमली ने कुछ पढ़ी लिखी महिलाओं से कहा भी कि उसकी मदद करें पर उनको भी अपने घर के काम से फुर्सत कहा। कई कागज उसके बिल्कुल समझ नही आते थे। इसी बीच एक और बड़ी घटना हुई, पुलिस आई और उसको जेल ले गई। सचिव और एक बड़े ठेकेदार ने साठ–गांठ कर एक बड़ा घपला किया और क्योंकि रमली सरपंच थी और सब जगह उसी के हस्ताक्षर थे। सचिव ने खुब सफाई से ये घोटाला किया था सो पूरा इल्जाम केवल रमली सरपंच पर ही आया।

रमली को लगा इस सरपंची ने उसका सब कुछ छीन लिया। ये राजनीति वगैरह से महिलाओं को दूर ही रहना चाहिए।

चर्चा को समेटना :

सहजकर्ता महिलाओं से सोशियोग्रामी और रमली की कहानी से निकली बातों को और उनके जवाबों को समेटकर सामने रखेंगें। सवाल करके उनके अर्न्तमन को झकझोरेगें कि–

- ✓ क्या ये सही है कि सरपंची, राजनीति या कोई भी अगुआई महिला के बस के काम नही है इनसे उन्हें दूर ही रहना चाहिए?
- ✓ क्या शासन, परिवार और गांव–समाज में लड़की को राजनैतिक रूप से सशक्त बनाने का प्रयास किया जाता है?
- ✓ अपने जीवन की बात बताइए – बचपन से लेकर अभी तक की कोई घटना जो आपके साथ हुई जिसमें, परिवार और समाज ने, आपको चर्चा करने, बैठकों में, ग्राम सभा में जाने और राजनीति से दूर रखने की कोशिश की?

अन्त में:

चर्चा की मुख्य बातें दोहराऐं। नागरिकता और राजनिति करना पुरूष गर्भ से नही सीख के आतें यही दुनिया में आकर सीखतें है। समाज लड़कियों और महिलाओं के लिए, घर चलाने को ही उनकी पहली जिम्मेदारी मानता है। और इसी बात की घुट्टी उन्हें बचपन से पिलाता है। यंहा तक कि वो खुद भी घर के खाना बनाने को गांव में ग्राम सभा में जाने से ज्यादा जरूरी मानने लगती है। खाना न बनाने पर उसे खराब लगता है कि उसने अपनी जिम्मेदारी नही निभाई पर ऐसी भावना, सामुदायिक बैठक या ग्राम सभा में न जाने पर नही आती। समाज के अनुसार, महिला– पत्नि, मां और बहु पहले है एक नागरिक बाद में। जब कोई महिला अपनी नागरिक होने की जिम्मेदारी निभाती है तो उसके रास्ते में रूकावटें पैदा करता है – कि कैसी औरत है घर का काम छोड़कर घुमती रहती है, आदमियों की तरह जब देखों मीटिंगों में जाती है। पारम्परिक मान्यताओं के अनुसार सत्ता करना पुरूष का काम है। मेरी बेटी और बहु बैठकों में जाए नई जानकारी लें और अपनी बात भी कहें, ऐसा कितने घरों में सीखाया जाता है। शरीर की तरह दिमाग को भी प्रैक्टिस से तेज किया जाता है अगर बैठकों में भाग ही नही लेंगी तो कल अगर सत्ता में बैठ भी गई तो क्या उसकी गाड़ी अपने बलबुते पर चला पाएगीं । और जब खुद शासन और समाज हर लड़की को नागरिक बनने और सत्ता में रहने की शिक्षा नही देगा, तो क्या ये आधी आबादी पूरी तरह आत्मनिर्भर हो पाएगी।

गीत – 'देश में गर औरतें अपमानित है लाचार है' के साथ बैठक समाप्त करें । अगले दिन सभी को सही समय पर आने के लिए याद दिलाऐं।

दूसरा दिन

जिम्मेदार नागरिक और संविधान

गतिविधी 1–हमारे गांव में हम ही सरकार

उद्देश्यः सरकार के बारे में समझ बढ़ाना कि सरकार किसके पैसे से चलती है और नागरिक होने के नाते हमारी क्या जिम्मेदारियां है?

प्रक्रिया :

1. सहजकर्ता सभी सदस्यों का स्वागत करें और आज की चर्चा शुरू करें। सभी सदस्यों से पूछें कि –
   - ✓ उनके अनुसार ये सरकार क्या है?
   - ✓ क्या उन्होनें सरकार को कोई टैक्स दिया है?
2. हो सकता है ज्यादातर लोग कहें कि उन्होंने कोई टैक्स नही दिया है। तब उनको बताऐं कि ये सही नही है हम सभी जो भी लेनदेन करते है, हम सभी सरकार को टैक्स देते है। इस बात को और समझने के लिए एक गतिविधी करते है।
3. दो महिलाओं को बुलाएं। एक को दुकानदार और एक को सरकार बनाले।
4. सदस्यों को बताऐं कि कंकड़ दुकान में बिकने वाला छोटे से बड़े सामान है जैसे– नमक, कपड़े, माचिस, तेल, गाड़ी, टी.वी., मोबाइल आदि और सभी को बताऐं की ये पत्ते असल में रूपए है ।
5. सारे कंकड़ों का ढ़ेर दुकानदार महिला और बाकी सभी सदस्यों को एक–एक पत्ता दे दें।

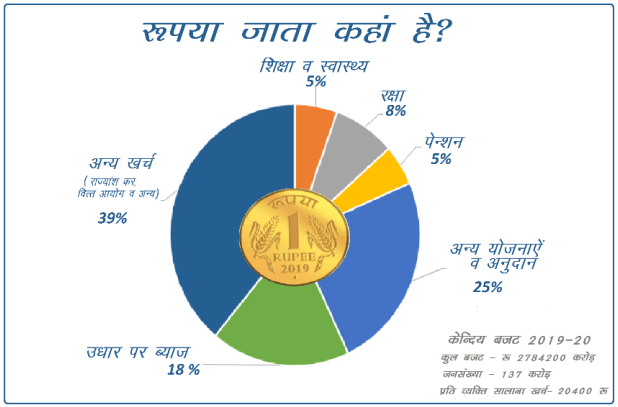

6. सभी सदस्यों को एक–एक करके दुकान पर जाकर अपने पत्ते के रूपए से कुछ सामान खरीदने को कहें। सदस्य पत्ता देकर सामान यानी कंकड़ लेकर वापस अपनी जगह आ जाएगें।
7. दुकानदार महिला, हर पत्ते से छोटा सा टुकड़ा फाड़ सरकार महिला को देगीं और बोलेगी– 'ये लो अपना टैक्स।'
8. जो महिला भारत सरकार बनी है वो चित्र की मदद से बताती है कि आप सबने जो टैक्स मुझे दिया उससे मैं देश चलाउगी। सौ में आधे से ज्यादा पैसा (39खर्च व 18 ब्याज) तो अन्य खर्च में ही चला जाएगा। चवन्नी योजनाओं पर जाएगा। 8 पैसा देश की रक्षा पर और 5 पैसा शिक्षा और स्वास्थ्य पर खर्च होगा।

चर्चा को समेटना :

सहजकर्ता सवाल करगी और उनकी समझ को गहरा करेगी –

- ✓ आपके गांव का साल का खर्च कितना है और कंहा कंहा कितना खर्च होता है?
- ✓ संभावना है कि ये जानकारी महिलाओं को नही होगी, अब इस बात के तह में जाइये कि क्यों ये गांव की पूंजी हमें अपनी नही लगती? और जिन गांवों के लोग जागरूक होते है उनके गांव के विकास में कोई फर्क दिखता है क्या?
- ✓ और क्या बाते है जो हम महिलाओं को जागरूक नागरिक बना सकती है?

गतिविधी 2–ये संविधान भला क्या है?

उद्देश्य: संविधान के बारे में और संविधान बनाने में महिलाओं के योगदान पर जानकारी बढ़ाना।

प्रक्रिया :

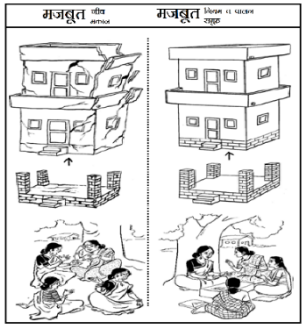

1. नागरिकता को और समझने के साथ हम संविधान को भी समझते है।
2. सहजकर्ता महिलाओं से पूछें कि उनके या आस–पास के गांव की सबसे अच्छी समिति कौन सी है और क्यों?
3. चर्चा में जब नियमों का जिक्र आए या उससे मिलती जुलती वजह आए तो वंहा अपनी बात को जोड़िए कि जैसे अच्छे से सभी की सहमति से बने नियमों और उन नियमों के पालन से एक समूह अच्छे से चल सकता है उसी प्रकार से एक देश को चलाने के लिए संविधान की जरूरत होती है। और हमारे देश का संविधान में वो सारी खासियतें है जो हमारे देश को महान बना सकती है, बस उनको सही से पालन करने की जरूरत है। समूह के नियम नींव की तरह होते है जैसे अगर किसी मकान की नींव मजबूत होगी तभी उस पर मजबूत मकान खड़ा हो पाएगा। बस अन्तर इतना है कि समूह में नियम में समय की मांग पर परिवर्तन किए जा सकते है।

भारत का संविधान : एक परिचय

- ✓ सहजकर्ता महिलाओं से पूछें कि वो संविधान के बार में क्या जानती है?
- ✓ संविधान को समझने से पहले उसके 4 मुख्य सिद्धान्तों – न्याय, स्वतन्त्रता, समता और बन्धुता, को समझना जरूरी है, जो कि हमारे संविधान की आत्मा है। सहजकर्ता अब संविधान की प्रस्तावना का पेज पढ़े और उसका मतलब भी बताए।
- ✓ इसमें इस्तेमाल किए शब्दों के सरल तरीके से मतलब बताऐं । हम भारत के लोग
    - ▪ <u>प्रभुत्व–सम्पन्न</u> : सम्प्रभुता शब्द का मतलब है अपने आप में पूरा या स्वतन्त्र। यानि भारत किसी भी अन्दर या बाहर की शक्ति के नियत्रण से आजाद सम्प्रभुता सम्पन्न राष्ट्र है। समाजवादी : समाज में सभी को समान रूप से बिना भेदभाव के सबके विकास को बढ़ावा देना।
    - ▪ <u>पंथ–निरपेक्ष</u>: किसी धर्म या पंथ ऊंचा या निचा माने बिना किसी पक्षपात के सभी को समान मानना।

- लोकतन्त्रात्मक : लोगो के लिए, लोगों के द्वारा लोगो की अपनी शासन व्यवस्था जिसमें सीधे लोगों द्वारा चुनी गयी सरकार से देश चलता है। इसे प्रजातन्त्र या अंग्रजी में डेमोक्रेसी भी कहते है।
- गणराज्यः पुराने समय में दो प्रकार से देश या राज्य चलते थे एक राजाधीन और दूसरा लोकाधीन या गणधीन। इस दूसरे प्रकार की शासन व्यवस्था को जंहा देश किसी राजा की निजी सम्पति नही है बल्कि गण यानि लोगो का है उस शासन व्यवस्था को गणराज्य कहते है। गणराज्य के मुखिया को सत्ता जन्म से विरासत नही मिलती।

✓ उसके बाद, हमारे इस संविधान के बनने की कहानी संक्षिप्त में बताएं। लगभग 100 साल से पहले भारत कई राज्यों में बंटा था और उन पर राजाओं का राज था। फिर भारत पर अंग्रेज सरकार ने शासन किया, देश आजाद होने के बाद 3 साल बाद 26 जनवरी 1950 में देश में संविधान लागू किया गया। भीमराव अम्बेडकर जी की अध्यक्षता में बनी कमेटी जिसमें 299 सदस्य थे, ने 165 दिन में हमारे संविधान की रचना की। किसी भी देश का यह सबसे बड़ा लिखित संविधान है। बनने के बाद भी उसमें लगभग 100 संशोधन किए जा चुके है। यह देश का सबसे बड़ा कानून है जो न केवल बुनियादी राजनैतिक सिद्धान्तों के ढ़ाचें को बताता है बल्कि अलग–अलग सरकारी संस्थान की क्या जिम्मेदारियां है और उनको क्या अधिकार मिलें है इसको भी दर्शाता है। इसमें नागरिकों के अधिकार और उनकी जिम्मेदारियां भी विस्तृत से बताई है। संसद भी चाहे तो उसको अनदेखा नही कर सकती। यह नागरिकों के लिए, नागरिकों की तरफ से लिखा गया संविधान है जिसका पहला वाक्य 'हम भारत के लोग...' से शुरू होता है।

आगे की जानकारी सवाल–जवाब के जरीए करें–

प्र0– हमारे संविधान को लिखने में कितनी महिलाओं ने योगदान दिया था?

उ0– 15

प्र0– हमारे संविधान को लिखने वालों में कितने आदिवासी थे?

उ0– एक भी नही।

प्र0– संविधान को लिखने में कितने साल लगे?

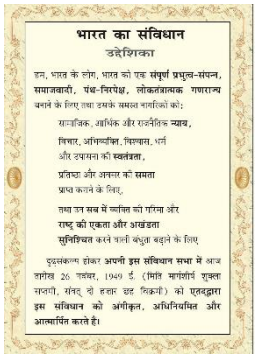
भारत का संविधान
उद्देशिका
हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को:
सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता
प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए
दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

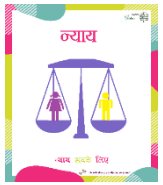

उ0– 3 साल।

महिलाओं को नागरिक दर्जा को हकीकत में उतारने के प्रयासों को समझने के लिए दो और तथ्यों को जानना जरूरी है।

1. पहला, संविधान बनाने में महिलाओं का योगदान
2. और दूसरा संविधान सभा के अध्यक्ष समानतावादी मूल्यों के नेता डा0 भीमराव अम्बेडकर के प्रेरणादायक प्रयास

1. संविधान बनाने में महिलाओं का योगदान
   इतिहास की किताबों में ज्यादातर जगह यही जानकारी लिखी थी कि संविधान को लिखने वाले 299 लोग संभवतः पुरूष ही थे, पर कुछ समानतावादी लोगों ने इस तथ्य को अंधेरे से निकाला कि उनमें 15 महिलाऐं भी थी। ये 15 महिलाऐं भारत की सतरंगी संस्कृति से थी। क्या इन महिलाओं के लिए रास्ता आसान रहा होगा, आइए इन संविधान लिखने वाली ऐसी ही एक महिला की जिन्दगी को करीब से जानते हैं–

दक्षायणी वेलुधन : बदलाव की एक सूत्रधार

संविधान सभा की महिलाएँ (स्रोत: महिला अध्ययन केंद्र)

दक्षायणी वेलुधन– पीछे की लाइन में दाहिने से सबसे आखिरी

1. केरल में जन्मी दक्षायणी अकेली दलित युवा थी जिन्होंनें केवल 37 साल की उम्र में संविधान को लिखने में योगदान दिया। वह पुलाया समाज की थी, जो कि जाति–आधारित व्यवस्था में खेतिहर मजदूरी करते है। केरल के मूल निवासी होते हुए भी पुलाया समुदाय को उच्च वर्गों के दमन के शिकार होना पड़ता था उन के साथ अमानवीय प्रतिबन्ध लगाए जाते थे । उन्हें सार्वजनिक रास्तों पर चलने और सार्वजनिक कुओं से पानी पीने की मनाही थी। पुलाया महिलाओं को उपरी वस्त्र यानी ब्लाउज आदि पहनने पर रोक थी, उस जमाने में उपरी वस्त्र केवल उच्च जाति की महिलाऐं ही पहन सकती थी। अपने स्तनों को ढ़कने के लिए पुलाया और अन्य दलित वर्ग की महिलाओं को मनके की माला पहनने मात्र की ही अनुमति थी।

नागेली का स्तन–टैक्स का विरोध चित्र साभार– मुरली टी.

2. जाति प्रथा की कुव्यवस्था को बनाए रखने के लिए त्रावनकोर के राजा ने दलित वर्ग की महिलाओं पर ब्रेस्ट–टैक्स यानी स्तन–टैक्स (मुलक्करम) लगाया था। एक कहानी के अनुसार इजावा जाति की एक जागरूक महिला नागेली ने इस टैक्स का विरोध किया। उसने उपरी वस्त्र पहने और स्तन–टैक्स देने से भी इन्कार किया। इसके लिए जब राजकिय कर्मचारी ने उस पर स्तन–टैक्स भरने का दबाव बनाया तो उसने अपने स्तन काट कर उनकी तरफ रख दिये। कुछ समय बाद उसकी मृत्यु हो गयी और उसके पति ने नागेली की चिता में कुद कर जान दे दी। यंहा इस बात को बताना जरूरी था क्योंकि दक्षायणी जो कि पुलाया समाज की थी जिस समाज को, इजावा जाति से भी नीचे माना जाता था, वो अपने घर की पहली लड़की थी जिसने उपरी वस्त्र–ब्लाउज पहनने की शुरूआत की और भारत की पहली दलित महिला जिसने उच्च शिक्षा ली।

दक्षिणायणी की शादी की फोटो (स्रोत: मीरा वेलायुधन)

3. पर रास्ता आसान न था। हाई स्कूल में एक बार धान की मेढ़ से गुजरते हुए एक उच्च वर्ग की लड़की जो सामने से आ रही थी, उसने दक्षायणी से रास्ता देने के लिए नीचे उतरने को कहा। दक्षायणी ने इन्कार किया आखिरकार नायर उच्च जाति की लड़की को ही धान के खेत में उतरना पड़ा। उस जमाने में ये छोटी बात नही थी। बी.एस.सी. की प्रयोग की कक्षा में उच्च जाति के प्रोफेसर ने उसे प्रयोग सिखाने से मना कर दिया। दक्षायणी ने दूर से ही प्रयोग देखा और सीखा। दक्षायणी का विचार था कि संविधान केवल देश के चलाने में ही नही बल्कि जीवन का एक समानता आधारित दर्शन है। जाति के भेदभाव को हटाने के लिए वो जीवन भर जूझती रही।अपने घर के अन्य सदस्यों माता और भाई बहनों की तरह उन्होंनें दलित जीवन से परेशान होकर इसाई धर्म नही अपनाया। बल्कि दलित रहकर हिन्दू धर्म की जाति आधारित कुरितियों को चुनौती देती रही। 1940 में उन्होंने एक कोढ़ रोगी को बिना धूमधड़ाके की हुई, अपनी शादी को करने के लिए आमन्त्रित कर कोढ़ रोगी के साथ हो रहे छुआछुत को खुली चुनौती दी।

(स्रोत: मीरा वेलायुधन)

दक्षिणायणी, पति आर.वेल्यूधन

4. एक बात जो महिला पुरूषों के बराबर दर्जे से जुड़ी है वो ये कि दक्षिणायणी ने खुद को पति की परछाई नही माना। उन्होंने हमेशा अपने विवेक से जिन्दगी को जिया। उनके पति जो कि प्रजा समाजवादी पार्टी में थे जबकि दक्षिणायणी खुद कांग्रेस पार्टी की सक्रिय नेता थी। आज भी लगभग 70 साल बाद भी कितनी महिलाऐं अपने दिमाग से वोट भी नही देती। वो समाज की पिलाई घुट्टी के अनुसार ही पुरूष और परिवार के कहे पर चलती रहती है। हम सभी महिलाओं को समाज की इस कुरिती को तोड़ना होगा। बाहर के बन्धनों से पहले खुद के अन्दर कि पिछड़ी मानसिकता के पिंजड़े से आजाद होना होगा।

2. महिला सशक्तिकरण के लिए अम्बेडकर का एक बड़ा प्रयास– 'हिन्दू कोड बिल':
अम्बेडकर जी ने कहा कि किसी समुदाय की प्रगति महिलाओं की प्रगति से आंकी जा सकती है। जंहा संविधान को बनने में 3 साल लगे पर महिलाओं को उनका पूरा हक मिलना अभी बाकी था। भारत के पुरूष प्रधान समाज में महिलाओं को हीन समझा जाता रहा है। खासकर हिन्दुओं की धार्मिक पुस्तकों में उसे पशुओं के सामान तक माना गया था। अम्बेडकर को महसूस हुआ कि संविधान में समानता का अधिकार हिन्दु समाज, कभी भी महिलाओं को अपने आप नही देगा। समाज को प्रचलित कुरितियों के विरूद्ध, न्याय और समानता को दायरे में रखने के लिए और हिन्दु महिलाओं को उनका संवैधानिक हक दिलाने के लिए उन्होंने 'हिन्दू कोड बिल' बनाया और 5 फरवरी 1951 को संसद में पेश किया । इस बिल की कुछ मुख्य बातें इस तरह थी–

- इस बिल में एक पत्नि के रहते पुरूष को दूसरी शादी न करने का प्रावधान।
- हिन्दु महिला को तलाक देने का अधिकार
- तलाक मिलने पर गुजारा भत्ता मिलने का अधिकार।
- बच्चा गोद लेने का अधिकार।
- लड़कीयों को भी पुत्रों के सामन उत्त्राधिकार का हक।
- बाप–दादा की जायदाद में हिस्से का अधिकार।
- स्त्रियों को अपनी कमाई पर अधिकार ।
- अपना उत्तराधिकार तय करने का अधिकार।
- अन्तरजातिय विवाह करने का अधिकार दिया।

पर जब संसद में उन्होंने इस हिन्दू कोड बिल को रखा तो वंहा विद्रोह मच गया और लोगों ने बिल को हिन्दू परम्पराओं और परिवार व्यवस्था को तोड़ने वाला बिल बताया। कुछ प्रगतिशील लोगों ने इसका स्वागत भी किया पर वो बहुत कम थे। संसद में ही नही बाहर भी इसके विरोध में प्रदर्शन और रैलिया हुई। और विरोध की वजह से वो बिल कभी भी लागू नही हो पाया। हिन्दु कोड बिल महिला सशक्तिकरण का पहला कानूनी दस्तावेज था। अपनी महिलाओं की उन्नति के लिए बिल के

विरोध को देखकर अम्बेडकर को लोगो की सोच पर बहुत अफसोस हुआ और इसी कारण से उन्होंने अपने कानून मन्त्री के पद से इस्तिफा भी दे दिया। बाद में इसके कुछ हिस्सों जिन पर कम विरोध था उसमें भी बदलाव ला कर 4 कानून पारित किए गए।

चर्चा के लिए सवाल–

इस घटना को सुनकर आपको क्या लगा?

आपके अनुसार क्यों संसद ने इसको सहमति नही दी? लोगों के मन में क्या डर थे?

चर्चा को समेटना :

चर्चा की मुख्य बातें दोहराऐं। संविधान के बारे में जानकारी वाले कुछ सवाल फिर से पूछे। चारों मूल्यों के बारे में पूछे।

सवाल करें –

- ✓ जैसे हिन्दु कोड बिल पर लोगो ने विरोध किया कि इससे औरतें आदमियों के नियंत्रण में नही रहेगीं, अपनी मनमानी करने लगेगी तो लोगो ने उसको लागू ही नही होने दिया, आपके परिवार या गांव समाज में हुयी कोई ऐसी ही घटना बताऐं जब लड़की या महिला के विकास के किसी काम के लिए आपके घर या गांव के लोग तैयार नही हुए या उन्होंने विरोध किया?
- ✓ आपको क्या लगता है कि संविधान के मिले सारे अधिकार गांव की हर महिला को मिल पाऐं है?

गतिविधी 2–जागरूक नागरिक

उद्देश्य: संविधान में दिए नागरिकों के अधिकार और उनके कर्त्तव्यों को समझना।

प्रक्रिया :

1. सहजकर्ता महिलाओं से पूछें कि उनके हिसाब से गांव की एक जागरूक नागरिक कैसा होगी? उसमें क्या–क्या गुण होगें। उन गुणों को दोहराते जाइए।
2. फिर उनको पिक्चर कार्ड की मदद से संविधान में बताएं नागरिकों के अधिकार और कर्त्तव्यों से परिचित कराऐं।
3. चर्चा करें कि हम कैसी नागरिक है? क्या अभी हम खुद को एक जागरूक नागरिक कहेगें? (जागरूक नागरिक यानि एक ऐसी नागरिक जो अपने अधिकार और कर्त्तव्यों दोनो को लेकर सचेत हो और उसे निभाती भी हो)
4. खुद को और बेहतर नागरिक बनाने के लिए क्या करना होगा? खासकर अपने समूहों में क्या करें?

चर्चा को समेटना के लिए सवाल–जवाब करें–

प्र0– हमारे संविधान को लिखने में कितनी महिलाओं ने योगदान दिया था? (उ0– 15)

प्र0– हमारे संविधान को लिखने वालों में कितने आदिवासी थे? (उ0– एक भी नही।)

प्र0– संविधान को लिखने में कितने साल लगे? (उ0–3 साल)

प्र0 – नागरिकों के 6 अधिकार बताए?

प्र0 – नागरिकों के 11 वां कर्त्तव्य के बारे में बताए?

अन्त में:

आज के जमाने की हम महिलाऐं जो अधिकारों का आनन्द ले रही है उसके पीछे बहुत सी दक्षीणायणीयों और अम्बेडकर जैसे मानवतावादी इन्सानों का हाथ है । पर अभी भी हमारी बहुत सी बेटिंया और बहुएं और हम खुद भी पूरी तरह से संविधान के मिले हुए मौलिक अधिकारों को कागज से अपने जीवन में नही उतार पाऐं है। हम देश स्तर पर नही तो अपने गांव में कोशिश करें तो समानता आधारित खुशहाली ला ही सकते है और गांव नही तो कम से कम परिवार में हीं और परिवार भी नही तो कम से कम खुद में ही। हमेशा की तरह गीत से सत्र खत्म करें।

गीत – 'अपन सपने सजाए तो....' के साथ बैठक समाप्त करें । अगले दिन सभी को सही समय पर आने के लिए चेताऐं।

तीसरा दिन

हमारे गांव में हम भी सरकार

गतिविधी 1–सत्ता का खेल

सामग्री : 10–12 आलू के आकार के पत्थर

प्रक्रिया :

1. महिलाओं को दो के जोड़े में खड़े होने को कहे। अब गतिविधी के नियम बताऐं कि
   - अ. सभी महिलाऐं दो समानान्तर लाइन में इस तरह खड़ी हो जाए कि उनकी जोड़ीदार महिला उनके सामने खड़ी हो। अब सत्ता पास सत्ता होगी दूसरी बिना सत्ता के कमजोर होगी।
   - ब. सहजकर्ता पत्थरों को दोनो के बीच में रख दें। ये पत्थर सत्ता है जिसके पास सत्ता होगी उसको अपनी ताकत के जोर की आजमाइश करनी होगी। उसका कहा दूसरी जोड़ीदार को मानना होगा। आदेश देकर या बिना नुक्सान पंहुचाएं कुछ भी कर सकती है।
   - स. 2 से 3 मिनट बाद फिर से पत्थर को बीच में रख दें और दोबारा करें।

चर्चा के सवाल:

✓ इस गतिविधी में क्या हुआ?

- ✓ जो सत्ता में थी उन्हें कैसा लगा?
- ✓ और जो सत्ता विहीन थी उन्हें कैसा लगा?
- ✓ अपने जीवन में आपने ऐसा महसूस किया है?
- ✓ क्या सभी ने सत्ता का प्रयोग नकरात्मक ही किया ? इसका उपयोग सकरात्मक भी तो कर सकते थे। वैसा क्यों नही किया?

चर्चा को समेटना:

जब हम शक्तिशाली होते है तो हम खुद को समर्थ पाते है और अक्सर हम सत्ता का उपयोग दूसरों को दबाने के लिए कर सकते है जबकि हम अच्छा उपयोग भी कर सकते है। जब हम सत्ता विहीन होते है तो खुद को दीनहीन पाते है।

गतिविधी 2–गांव नही किन्ही पांच का

उद्देश्य: पंचायत व्यवस्था को समझना और पंचायत की भूमिका महिलाओं के आजीविका सशक्तिकरण में।

प्रक्रिया : रोल–प्ले व चर्चा

1. महिलाओं से उनके गांव की ग्राम सभा का रोल प्ले करने को कहें हो सके तो पिछली ग्राम सभा बैठक का रोल–प्ले करे।
2. सहजकर्ता दो महिलाओं को चुनें जिनका पिछली बैठकों में उनकी जेण्डर की समझ में उनको अच्छा पाया हो। उन दो महिलाओं को सहजकर्ता उनके टास्क बताऐं कि वो महिलाऐं बैठक में निम्न बातों को आब्जर्व या अवलोकन करें–
   - ✓ बैठक प्रक्रिया में जेण्डर भेदभाव कंहा कंहा लगा?
   - ✓ बैठक ऐजेण्डा में मुददों का चुनाव– क्या इसमें महिला से सम्बन्धित मुददों को लिया गया।
3. रोल प्ले के मुख्य बिन्दुओं पर चर्चा करें।
4. उसके बाद जेण्डर जांच दल (आब्जर्वर) महिलाएं अपने जांच के बिन्दुओं को प्रस्तुत करें।

चर्चा :

- ✓ "महिला के मुद्दे और पुरूषों के मुद्दें"– ऐसा सम्भव होगा कि – "महिला से सम्बन्धित मुददों" पूछे जाने पर महिला हिंसा, स्वास्थय, सामजिक सुरक्षा, नरेगा पेमेन्ट आदि बातें आती है। क्या आजीविका महिला मुददा और बच्चों का पोषण पुरूषों का मुददा नही? सहजकर्ता इस पर सवाल करें कि ऐसा क्यों है। इसी प्रकार परम्परावादी सोच के अनुसार किन मुद्दों को पुरूषों का मुद्दा माना जाता है। और क्या ये गैरबराबरी नही है? एक प्रगतिशील गांव में कैसा होना चाहिए। क्या युवा, बच्चों और बुजुर्गों के मुद्दे चर्चा में लिए गए। यही समय है जेण्डर बकसे के विचार/कन्सेप्ट से महिलाओं को परिचित कराने का।
- ✓ जेन्डर का बक्सा: पिक्चर कार्ड की मदद से बताए कि कैसे समाज महिला और पुरूषों को 'औरत और मर्द' के बक्से में धकेलता रहता है और इसी सोच की वजह से महिलाओं को गांव के सामुदायिक कामों में उतना प्रेरित नही किया जाता जितना कि घरेलु, और धार्मिक कामों में, और उसी तरह पुरूषों को रसोई और बच्चा पालने के कामों में। और उसमें इनाम और दण्ड के जरिए उसे लागू कराता रहता है। पैसे कमाना, आजीविका के निर्णय करने की ट्रेनींग परिवार अपनी बेटियों को नही देता। इसी सोच का परिणाम है कि आधी आबादी यानी औरतें और युवा भी ग्राम सभा में अपना योगदान नही देते।
  सोच के इस बक्से को तोड़ने की जरूरत है
- ✓ पंचायत और आजीविका संर्वद्धन: आजीविका का विकास किसका मुद्दा? और क्या खेती किसानी या गांव की आजीविका का मुद्दा ग्राम सभा का मुख्य फोकस नही होना चाहिए। पंचायतीराज व्यवस्था के तहत ग्रामसभा एक संवैधानिक संस्था है। हरेक गांव में रहने वाले 18 साल से उपर के लोगों का नाम

मतदाता सूची में होता है। इन लोगों से मिलकर ग्राम सभा का गठन किया जाता है। महिलाओं को पंचायत एवं ग्रामसभा में बराबर का अधिकार है। गांव के 10 प्रतिशत मतदाताओं या 50 सदस्यों (इनमें से जो कम हो) की मांग करने पर विशेष बैठक बुलाई जा सकती है। ग्राम सभा की बैठक में सभी सदस्य ग्राम सभा और ग्राम पंचायत का रिकार्ड देख सकते हैं। आय और खर्च का हिसाब. किताब पूछ सकते हैं और गांव में चल रहे कार्यो की पूछ परख भी कर सकते हैं। और केवल जांच ही नही अपना योगदान भी देना हर नागरिक का कर्तव्य है।

हरेक नागरिक को सालभर का पोषण और खुशहाल जीवन जीने की पर्याप्त आय हर ग्राम सभा का पहला और स्थाई मुददा होना चाहिए। हरेक ग्रामसभा अगर तय कर ले तो अपनी संवैधानिक ताकत का उपयोग करके हर नागरिक को सालभर की आजीविका सुनिश्चित कर सकती है। और ग्राम सभा मतलब केवल पंच–सरपंच नही बल्कि उसके सारे जागरूक वोटर। पिक्चर कार्ड की मदद से काम के उदाहरण बताए। ऐसा बहुत से जागरूक गांव कर भी रहे है और कई देश भी। ऐसे ही एक देश –आइसलैण्ड के बारें में महिलाओं को बता कर प्रेरित करें।

केस – आइसलैण्ड कैसे बना सबसे जेण्डर समान देश

- ✓ संसार के नक्शे वाला पिक्चर कार्ड दिखाते हुए पहले पूछे की ये किसका नक्शा है?
- ✓ फिर पूछे कि इसमें भारत का नक्शा कंहा है? अब इस कार्ड में बताई जानकारी बताए कि इस कार्ड में रंगों के अनुसार जेण्डर समानता के अनुसार देशों की रैकिंग की हुई है। सबसे जेण्डर समान देश गाढ़े हरे रंग से दिखाऐं है। ये भी पूछें कि उन्हें क्या लगता है कि 149 देशों में भारत कौन से स्थान पर होगा? अनुमान से बताने दें। फिर उत्तर दें कि भारत 108वें स्थान पर।
- ✓ अब बताएं कि जेण्डर समान देशों की सूची में सबसे उपर जो देश है उसका नाम है– आइसलैण्ड । संसार के नक्शे में उसे दर्शाऐं।

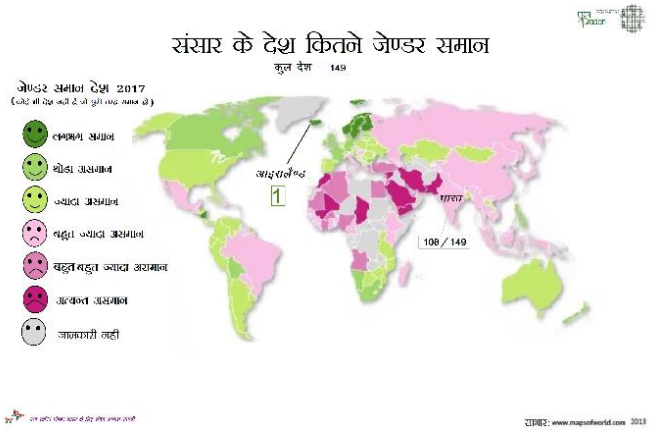

अब उसके बारें में 5 बाते बताऐ कि कैसे लगभग 40 सालों में उसने इस प्रकार से प्रगति की कि आज वो पहले स्थान पर है–

1. 1975 में पूरे देश की 90 प्रतिशत महिलाओं ने एक दिन की सामूहिक हड़ताल की थी और समान अधिकारों के लिए सड़कों पर उतरी थी। जिससे महिला एकता का अनोखा उदाहरण देश के सामने आया। फिर महिलाओं ने राजनीति में सक्रिय भागीदारी करना शुरू किया। महिलाओं के सत्ता में आने का असर हुआ कि उन्होनें देश में महिला सशक्तिकरण लाने वाले निर्णय लिए।
2. उसके बाद 1976 में जेण्डर समानता कानून लागू हुआ। वंहा की महिला नागरिकों और जागरूक पुरूषों ने ये समझ लिया कि जेण्डर समानता अपने आप नही होगी इसे लाना होगा। 2016 में संसद में लगभग आधी सीटों पर महिलाऐं आई। भारत में ये प्रतिशत केवल 11 है।
3. एक और निर्णय जिसने महिलाओं को आर्थिक हक के लिए मदद की वो था, आर्थिक संस्थानों के निर्णायक बोर्डों में महिलाओं के लिए 40 प्रतिशत सीटों का आरक्षण किया।
4. जचकी के बाद माता–पिता दोनो को 3–3 माह की छुट्टी मिलती है और 3 माह एकस्ट्रा। आइसलैण्ड में 90 प्रतिशत पिता बच्चे की पालन पोषण के लिए छुट्टी लेते है। यानि बच्चे को पालने का काम मां का अकेले का नही होता।

5. महिला पुरूष के मजदूरी/वेतन में समानता।

वैसे कोई भी देश पूरी तरह से समान नही हुआ है फिर भी औरतों के लिए यह आइसलैण्ड देश सबसे अच्छा है। अभी भी बहुत कुछ है करने को मगर फिर भी ये एक उदाहरण है। आइसलैण्ड सीखाता है कि अगर महिलाऐं निर्णायक भूमिकाओं में आती है तो समानता का रास्ता आसान हो जाता है।

चर्चा के लिए सवालः

1. आइसलैण्ड की कहानी क्या बताती है?
2. महिलाओं के ग्राम स्तरिय या ग्राम सभा बैठकों में सक्रिय हाने से क्या फर्क पड़ता है?

गतिविधी 3–ग्राम सभा में महिलाओं की भागीदारी की योजना

उद्देश्यः महिला नागरिकों का नेतृत्व में आना गांवों को बेहतर बनाने के लिए क्यों जरूरी है?

प्रक्रिया :

1. महिलाओं को हमारा गांव कितना जेण्डर समान पिक्चर कार्ड की मदद से आंकलन करने की गतिविधी कहे।
2. अब अपने समूह में जाकर ग्राम सभा में महिलाओं की भागीदारी की योजना बनाने को कहे खाली भागीदारी नही एक लक्ष्य के साथ भागीदारी जरूरी है। हर महिला का आर्थिक विकास लक्ष्य पाने के लिए योजना बनाए।

तीन दिन की चर्चा को समेटना :

औरत और नागरिकता पाठ के सत्रों को दोहराएं। रूचिकर करने के लिए सवाल किजिए।

अभी हाल ही की बात है एक हमारी महिला साथी को ट्रेनींग से आते हुए देर हो गयी तो उसे उसके पति ने बुरी तरह से उसके साथ मार पीट की। हम जानते है की वो दीदी कोई अलग नही है। सोचकर देखे तो क्या संविधान से मिला स्वतन्त्रता का अधिकार उन्हें आज भी आजादी के 70 साल बाद भी मिल पाया है। और अगर महिन से देखेने लगेंगे तो समझेगें कि हम में से कोई भी पूरी तरह से आजाद नही है। और केवल हम ही नही हमारे आदिवासी, दलित भाई, वंचित वर्ग और अन्य जेण्डर के सभी नागरिक भी। अगर हम इतने नागरिक आज भी आजादी के लिए जूझ रहे है तो वो कौन है जो हम पर सत्ता वान है, और क्यों?

अन्त में:

अगर आदर्श नागरिक की नजर से न भी देखे, एक बहुत ही स्वार्थी सोच से जाए तब भी गांव में सभी नागरिकों के सुख–दुख एक दूसरे से बंधे है। जीने के लिए हमें निजि संसाधन ही नही सामूहिक संसाधन जैसे– बिजली, सड़क, पानी, चारागाह, पेड़, स्कूल, अस्पताल और वृद्ध–वंचित–विकलागों की पेंशन और व्यवस्थाऐं आदि कई जरूरतें है जिनका प्रबन्धन गांव स्तर पर करना होता है। अगर उसके प्रबन्धन में हम हिस्सा नही लेते है तो हम मौका देते है उन लोगों को जो दूसरों का हक मारने और सामुदायिक संसाधनों पर कब्जा जमाने के लिए तैयार रहते है। अपने गांव का एक छोटा सा आंकड़ा ही ले लें कि कुल सरकारी जमीन आज से 20 साल पहले कितनी थी और आज कंहा और किसके कब्जे में है? इस बैठक चक्र की मुख्य बातों को दोहराएं–

- ✓ जेण्डर बराबरी लाने के लिए निर्णायक भूमिकाओं में आना लड़कियों और महिला के लिए जरूरी है।
- ✓ गांव के विकास में नागरिकों की भागीदारी महिलाओं को संविधान से मिले उनके अधिकार को सच में दिलाने के लिए जरूरी है ।
- ✓ जेण्डर समानता अपने आप हासिल नही होगी।
- ✓ संगठन में बदलाव की ताकत हैं।

पूछें कि उन्हे ये बैठक चक्र कैसा लगा? गीत – औरतें उट्ठी नही तो जुल्म बढ़ता जाएगा.....के साथ ये बैठक चक्र पूरा करिए।

बैठक चक्र - 4

आजीविका का हक:
जितना तुम्हारा उतना हमारा

दिन 1– हम भी है किसान !
दिन 2– मेरी सम्पति मेरा हक!
थ्दन 3– आर्थिक आजादी की उड़ान

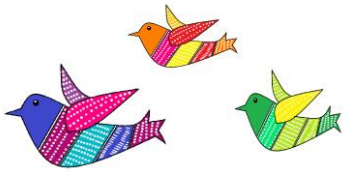

आजीविका का हक: जितना तुम्हारा उतना हमारा

उद्देश्य :

- ✓ दोहराना
- ✓ महिला भी उतनी ही किसान है जितने की पुरूष
- ✓ महिला की आर्थिक गुलामी को खत्म करना क्यों जरूरी है
- ✓ सम्पति पर हक होना महिला का मौलिक अधिकार

चर्चा के लिए माहौल और आवश्यक सामान :

- ✓ एक स्थान जंहा 20 से 25 महिलाऐं गोल में बैठ कर खुल कर चर्चा कर सकती हो ।

समय : प्रति दिन 2:30 घंटा

पहला दिन

हम भी है किसान

गतिविधी : दोहराना

प्रक्रिया :

1- पिछली तीनो बैठक में बताये गए विषय के बारे में महिलाओ की समझ का स्तर जानने के लिए चिट का प्रयोग करे (चिट पहले से तैयार कर ले, चिट पे लिखे शब्द इस प्रकार हो सकते है-

1- जेण्डर
2- लिंग
3- कमल -कमली
4- काम का बटवारा
5- लीलावती
6- महिला हिन्सा
7- ग्राम पंचायत और आजीविका
8- तराजु
9- फूल और कान्टा
10- महिला सरपन्च
11- जमिन मे भागीदारी
12- पितृसत्ता क जहरीला पेड
13- नागरिकता
14- ग्राम सभा
15- मेंढक- मेंढकी
16- जेंडर बक्सा

3. अब ग्रुप के हर एक सदस्य को बीच मे आके एक चिट उठाने के लिये बोले और उस चिट पे लिखे शब्दों के बारे मे जो याद आ रहा है वो उस सदस्य को सबके सामने बताने के लिये बोलिए.

4. यदि सभी सदस्य सही सही बता देते है तो अगली गतिविधि पर जाये, यदि नहीं बता पाते तो सदस्यों को ही एक दुसरे को बताने के लिए बोले और आखिरी में सहजकर्ता ही जरुरत होने पर थोड़ी और चर्चा करें.

इसके बाद अगली गतिविधि की ओर बड़े

गतिविधि – महिला किसान

उद्देश्य : महिला स्यंव को किसान के रूप में देख सके और महिलाओं को ये सोचने का मौका मिले कि किसानी में उनका योगदान क्या है और **पहचान** क्या है ।

प्रक्रिया :

1. समूह में सभी को आंख बंद करने के लिए बोलिये.
2. फिर समूह को बोलिये आंख बंद करके एक किसान की छबि सोचे, किसान कैसा दिखता है, उसका रूप कैसा होता है, कैसे कपडे पहनता है इत्यादि.
3. फिर ग्रुप को थोड़ा टाइम देने के बाद ग्रुप के सदस्यों को आंख खोलने के लिए बोलिये, उसके बाद सदस्यों को ग्रूप में से एक सदस्य को चुनने के लिए बोलिये जो चित्र बना सकती है.
4. ग्रुप के हर एक सदस्य से एक एक कर उनके किसान की छबी के बारे में पूछिए. ग्रुप के कहे अनुसार चयनित महिला को किसान का चित्र बनाने के लिए बोलिये. चित्र बनने के बाद पुरे ग्रुप को दिखाइए और अलग से रख दीजिये।
5. ग्रुप के सदस्यों को कुछ पत्थर इकठ्ठा करने के लिए बोलिये ।

6. ग्रुप से दो सदस्यों को गोले के बीच में बुलाइये और एक जन को एक महिला और दूसरे जन को एक पुरुष का चित्र कोरे कागज में बनाने के लिए बोलिये।
7. महिलाओं से पूछिए की वो किसानी का मतलब क्या समझते है। फिर ग्रुप से एक दो अनुभव आने दीजिये। और अगर उदाहरण नहीं भी आये तो भी चलेगा। उसके बाद ग्रुप को बोलिये कि एक फसल के माध्यम से मिलकर समझते कि किसानी क्या होती है।
8. उदहारण के लिए मक्का की फसल लेते है। अब ग्रुप से पूछिए की मक्का की खेती करते समय खेत तैयार करने से लेके मक्के का दाना निकालने, मक्के का दलिया बनाने तक की प्रक्रिया एक एक कर सारे सदस्य गोले के बीच में बताये.
9. जब पहली सदस्य खेत जोतना बताएंगी तो उनसे ये भी पूछिए की ये काम कौन करता है, महिला या पुरुष। अगर महिला जोतती है तो महिला के चित्र पर एक पत्थर रखने के लिए बोलिये और अगर पुरुष जोतता है तो पुरुष के चित्र पर पत्थर रखने के लिए बोलिये।
10. ऐसे ही ग्रुप के सारे सदस्य को एक एक कर बुलाइये और मक्के के विभिन्न कामों के बारे में एक एक करके बताने के लिए बोलिये। उसके साथ ही उस काम को जो भी करता है उसके चित्र के ऊपर पत्थर रखने के लिए बोलिये।
11. मक्के की खेती में विभिन्न काम इस तरह हो सकते है।

    i. बोनी के लिए बीज तैयार करना।
    ii. बोनी करना.
    iii. बोनी से पहले या बाद में खाद डालना।
    iv. निंदाई करना।
    vi. जागल पे जाना।
    vii. चिड़िया भगाना।
    viii. मक्के की तुड़ाई करना।

ix. मक्के का बीज निकालना।

x. बीज सुखाना।

xi. अगले साल की बोनी के लिए बीज संभाल के रखना।

xii. मक्के का डंठल काटना इत्यादि।

12.आखिर में ग्रुप से पूछिए ये जो काम के बारे मे बताया है ये क्या है। किसानी क्या है. इन सब कामो को क्या हम किसानी का नाम दे सकते है।

13. फिर ग्रुप में से एक सदस्य को आकर महिला के चित्र के ऊपर और पुरुष के चित्र के ऊपर रखे हुए पत्थर की गिनती करने के लिए बोलिए।

14.फिर ग्रुप से पूछिए की ये पत्थर की गिनती के बाद ग्रुप को कैसा लग रहा है।

15.इसके बाद चर्चा को आगे बढ़ाते हुए महिलाओं से पूछिए कि यदि मक्के की खेती के विभिन्न कामों में से कोई एक काम न करे तो क्या मक्के की खेती अच्छे से हो पायेगी.

16.फिर पूछिए की क्या सारे कामो में महिला और पुरुष दोनों का योगदान है या सिर्फ किसी एक जन का.

17.फिर ग्रुप को किसान वाला चित्र दिखाकर पूछिए कि अगर किसानी में दोनों का योगदान है तो जब किसान के बारे मे सोचते है तो सिर्फ भैया का चेहरा क्यों सामने आता है। (ग्रुप से शायद ये निकल के आ सकता है कि पुरुष खेत जोतते है तो फिर ग्रुप को पुछिये कि किसनी सिर्फ खेत जोतने से संभव है क्या ? और इस पर थोड़ी और चर्चा करें)

समेटना : ग्रुप को पुछिये कि अगर उनके एक बेटा और एक बेटि है तो उनमे से वो किसे आगे जाके एक किसान के रूप मे देखते है और क्यों ?

अंत में इस गीत- बीज लगाकर खेतों में..... के साथ मीटिंग समाप्त करें ।

दूसरा दिन

मेरी सम्पति मेरा हक

गतिविधी : आनन-फानन दो दोस्त

उद्देश्य :
पत्नि और पति के रिश्ते की असमानता को समझना कि कैसे हमने उनके बीच की गैरबराबरी को स्वभाविक मानते हुए अपना लिया है और उस पर समाज की स्वीकृति की मुहर लगा दी है। जीवनसाथियों के बीच सत्ता के अन्तर की महीन बातों को पहचानना और इसे रिवाज की चादर से हटाकर न्याय के नजरिए से तौलना।

सामग्री: 'दो दोस्त' कहानी या पिक्चर-बुक

प्रकिया :

1. सहजकर्ता सभी सहभागियों को पिक्चर-बुक की मदद से रोचक तरीके से 'दो दोस्त' की कहानी सुनाऐं।
2. कहानी सुनाते समय बीच में, अगर सहभागी कुछ सवाल पूछें तो जवाब न दें। नम्रता से टाल दें और अभी ध्यान से कहानी सुनने को कहें। कहानी में जो बताया गया है उससे एक्सट्रा अपनी तरफ से कुछ भी नहीं जोड़े।

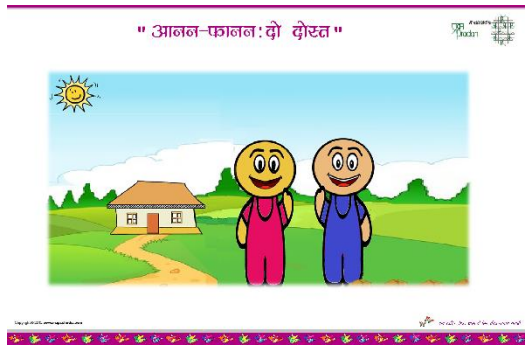

'आनन फानन-दो दोस्त'

दो दोस्त आनन-फानन, एक गांव में रहा करते थे। दोनों में बहुत अच्छी दोस्ती थी। दोनो ने मिलकर अपनी आवक बढ़ाने का फैसला लिया। पास के गांव में सब्जी की खेती से लोगो को मुनाफे की बात उन्होंने सुनी थी। खेती की योजना बनायी और दोनों फानन के पिता की जमीन पर खेती करने लगे। मिलकर दोनो ठीक-ठाक कमाने लगे। आनन का घर दूर था। सो वो भी वही साथ रहने लगा।

इतनी आमदनी होने लगी कि अब फानन के माता-पिता का भी गुजारा भी उन दोनो की खेती की आवक से मजे से चलने लगा। उन्होंने एक पम्प भी खरीद लिया। फानन के भाई का दाखिला शहर में हो गया था उसका खर्च भी खेती से पूरा हो जाता था। उस आमदनी से, आनन अपने घर पर कुछ नही भेज पाता

था। उनकी तरक्की के चर्चे आस-पास के गांव में भी होने लगे। दोनो खेती करके शाम को घर आते, आनन खाना बनाने में जुट जाता था। फानन को चर्चा करने का शौक था अक्सर गांव का हाल-चाल लेकर देर से घर पंहुचता था। सुबह भी आनन को ही खाना बनाना पड़ता और फिर दोनो एक साथ खेती चले जाते।

एक बार आनन के घर से खबर आयी कि उसके पिता की तबियत बहुत खराब है। पैसे की तंगी भी है। सभी भाई बहन में आनन ही सबसे बड़ा था। उसको बहुत फिक्र हुयी। इधर फानन की मां की तबीयत भी ठीक नही थी। खेती के भी बहुत काम थे।

आनन अपने पिता के पास नही जा पाया। आनन की मां को इलाज के लिए एक बैल बेचना पड़ा। फानन का भाई इस बार जब गांव आया तो उसने भाई से एक मोटर साइकिल खरीदने की बात की। भाई ने कहा अब आने-जाने में बहुत दिक्कत होती है। दोनो भाई मिलकर इस्तेमाल करेगें। फानन को उसकी सलाह ठीक लगी। आनन को फानन ने समझाया कि खेती के काम से भी इधर-उधर जाना पड़ता है तो उसमें भी सुविधा होगी, और फानन ने दोनो भाई के लिए मोटर साइकिल खरीद ली।

कुछ दिन बाद खबर आयी कि आनन के पिता नही रहे। आनन और फानन तुरन्त मोटर सायकिल से आनन के घर पंहुच गए। मां ने बताया कि बिमारी ठीक नही हो पायी थी और शहर जाकर इलाज कराने के लायक पैसे भी नही थे। आनन कई दिन तक बहुत उदास रहा। पहले भी फानन खेती के काम के अलावा घर के किसी काम में हाथ नही बटाता था। मोटर-सायकिल आने के बाद तो उसका घर से बाहर रहना और भी बढ़ गया। अब फानन कभी-कभी शराब भी पीने लगा। आनन इन आदतों से दूर ही रहा। फानन की संगत से भी उसने ये लत नही पाली। आनन न सिर्फ पूरे घर को संभालता यंहा तक कि फानन के मां बाप का भी ख्याल रखता।

पिछ्ले साल दोनो ने थोड़ी और जमीन खरीदी। अब सब्जी का उत्पादन और बढ़ गया था। दोनो ने सोचा है कि अगले साल बोरिंग खुदवाएगें। पर फानन के पिता की जिद थी कि पहले घर पक्का करवाना है। आनन का मन था कि बोरिंग पहले खुदवाये और बाद में घर की सोचे पर घर ही पहले बनाना पड़ा।

जो भी था दोनों की दोस्ती बहुत पक्की थी। इसी तरह से मिलजुलकर, समझ-बूझ और सलाह से चलते हुए, दोनो ने खुब तरक्की की।

कहानी खत्म होने पर सवाल पूछें ।

चर्चा के लिए सवाल:

1. इन दोनो दोस्तों की कहानी को सुनकर आपको क्या लगा?
2. उन दो दोस्तो के बीच जो हो रहा था सब ठीक था क्या? क्या बातें है जो आपको गलत लगी? और क्यों?

चर्चा :

- सभवतः साथी बोलेंगें की फानन ही आगे बढ़ रहा था, आनन के साथ ठीक नही हुआ वो अपने पिता के इलाज में भी पैसा नही भेज पाया– वगैरह। इस कहानी में एक तथ्य जान–बूझ कर छुपाया गया है और वह यह है कि फानन और आनन पति–पत्नि है।
- चर्चा करें कि – क्या ये कोई खास परिवार है जंहा ऐसा अन्याय होता है या घर–घर की यही कहानी है। क्या पति–पत्नि दोनो को बराबर सम्मान और बराबर हक होते है?
- महिलाओं से पूछे कि उनमें से कितनी महिलाऐं अपने मायके पैसे से (उधार नही) मदद कर पाती है
- सहभागियों को परिवार में पति–पत्नि के बीच में– निर्णय की, संसाधन, सुख–सुचिधाओं, खान–पान, खेलने, आने–जाने की स्वतन्त्रता, अपने माता–पिता की देखभाल करने, और भी गैरबराबरियों को पहचानने और बताने में मदद करें। संवेदनशीलता के साथ सहभागियों को अपने सम्बन्धों के बारे में बताने को प्रेरित करें।
- और क्या ये पति–पत्नि के सम्बन्ध की कहानी ऐसे ही चलनी चाहिए या इसमें बदलाव होना चाहिए?
- एक आदर्श स्थिति की कल्पना किजिए और अगर समय हो तो उसको रोलप्ले के जरिए भी दिखला सकते है।

चर्चा को समेटना:

अन्त में सहभागी को बताएं कि कैसे हमने पति को मालिक और औरत को कमतर मान लिया है। रिवाज बना दिया हैं कि औरत ही ससुराल जाएगी। बहु के ससुराल में रहने को नार्मल और दामाद के ससुराल में रहने को असहज बना दिया है। असामनता को स्वाभविक मान लिया है। कैसे हमे ये सब जो रोज हमारे घरों में होता है, खटकता नही है, नार्मल लगता है क्या ये अन्याय नही है। ऐसा ही तो होता है ये मानते हुए हमने इन अन्याय को ही नार्मल बना दिया है। आज की चर्चा का उददेश्य यही था पति–पत्नि के रिश्तें के अन्दर की इस घुली मिली गैरबराबरी को पहचानने में अपनी समझ बना सकें।

बदलाव की पहल:

सहभागियों को इस गतिविधी के बाद अपने घर जाकर इस विषय पर चर्चा करने को कहें और कम से कम कोई पहल करने सलाह बनाने को कहें।

चर्चा का अन्त एक इसी विषय से जुड़े गीत से करें।

गतिविधि – हमारी तुम्हारी संपत्ति

उद्देश्य : महिला और पुरूष के बीच सम्पति के अधिकार की गैर बराबरी को सामने लाकर महिलाओं में इस अन्तर को दूर करने को प्ररित करना

सामग्री : छोटे बड़े आकार के पत्थर, कागज या चार्ट के छोटे टुकड़ों पर घर–खेत के जो–जो सामान रहता है; जैसे – बर्त्तन, कपड़े, बिस्तर, खेती के औजार, गाय, भैंस, घर, ज़मीन आदि सरल सा चित्र बना लें। एक चिट में एक ही चित्र हों। इन्हें पहले से बनाकर रखे। हरेक चित्र पर सामान का नाम भी लिख लें।

प्रक्रिया :

1. सबसे पहले महिलाओं को पिछली गतिविधी काम का बटवारा जो तराजू के साथ की थी उसको याद दिलाए। उनसे पूछे कि उसमें क्या निकला था। किस पर काम का बोझ ज्यादा है, महिला पे या पुरूष पर?
2. उनके कहे के अनुसार पत्थरों के 2 ढ़ेर बना दें, एक महिला के काम का और दूसरा पुरूषों के काम का। आप जानबूझ कर महिला को कम पत्थरों का बनाये और उनको सही करने दे।
3. अब गतिविधी को आगे बढ़ाते हुए कहानी बताएं कि एक गाँव कें एक आम परिवार की बात है जहाँ किसी कारणवश पति–पत्नी ने अलग होने का निर्णय लिया है। और वो आज अलग हो रहे है। 2 महिलाओं का आगे बुलाइए। एक पति है और एक पत्नि उन दोनो के सामने कागज की सारी चिटे रख दे।
4. सबको बताएं कि ये कागज की चिटे घर का सामान है। अब एक एक चिट उठाए और उस सामान का नाम पढ़े और महिलाओं से पूछें कि बताइए ये सामान किसको मिलेगा। महिलाओं को कहिए कि समाज में आम तौर पर जो होता है उसी हिसाब से बताएगी।

5. इस प्रकार से हरेक सामान का नाम ले और जो महिला को मिले वो उसके सामने और जो पुरूष को मिले उसको पुरूष के आगे अलग अलग फैला कर रखते जाए। कुछ खली चिट जरूर रखें जो नए सामान को जोड़ने के लिए उपयोग करें।
6. अन्त में देखे कि पत्नी के हिस्से में क्या–क्या आया और पति के हिस्से में क्या आया।

चर्चा के लिए सवाल :

- काम के वक़्त तो औरत के 'हिस्से' में बहुत कुछ आ जाता है, पर सम्पत्ति के बँटवारे के वक़्त क्या हाथ लगा?
- ऐसा क्यों है और क्या ऐसा ही होना चाहिए?
- इसके दुष्परिणाम क्या हैं? महिलाओं से ही उनकी आप बीती बताने को कहें।

समेटना :

इन बिन्दुओं को लेकर चर्चा करें:

- खेती के लिए रुपए में 70–80 पैसे काम औरत करती है, यानी 70–80 प्रतिशत। फिर भी 'किसान' के रूप में उसकी पहचान नही है। 'किसान' शब्द सुनते ही पुरुष का ध्यान आता है, स्त्री का क्यों नहीं?
- औरत को न ससुराल में हक़ मिलता है न मायके में। माँ–बाप के घर में कुछ नहीं। जब हक़ माँगों तो सुनने को मिलता है कि 'भाई से लड़ेगी, प्यार गँवाएगी।' पर जब दो भाई में सम्पत्ति का बँटवारा होता है तब ऐसी बात क्यों नहीं कही जाती?
- पति के घर में कुछ भी औरत के नाम नहीं – न ज़मीन, न राशन–कार्ड, न घर, न ढोर, न बर्त्तन।
- सवाल के ज़रिए प्रेरित करें कि जब औरत इतना कुछ करती है, तब उसे कोई अधिकार क्यों नहीं मिलता? इसके लिए हम क्या कोई कदम उठा सकते हैं?

गतिविधि – वाद–विवाद

प्रकिया:

1. सभी महिलाओं को पहले वाद विवाद के बारे में बताए।

2. फिर उन्हें वाद–विवाद का विषय दे – सम्पति लडकीयों के नाम भी होनी चाहिए या केवल लड़कों के पास जानी चाहिए

अन्त में :

इस वाद विवाद के जरिए आज भी परिवार क्यों लड़कियों को हक नही दे रहा है इस बात की तह में जाएगें।

आजादी के इतने साल बाद भी औरत आर्थिक रूप से आजाद नही है। कुल खेती का केवल 13 प्रतिशत हिस्सा ही ओरतों को मिला है। 87 प्रतिशत पर पुरूषों का कब्जा है। अगर बस में कोई हमारा 20 रू भी चुरा लेगा तो हम क्या करेगे। पर हम औरतों के हिस्से का इतनी किमती जायदाद हमें हमारे मां बाप और समाज नही देता। जब हमारी बेटी के साथ ससुराल में अच्छा व्यवहार नही होता तो हमें दुख होता है पर जो अन्याय हम खुद करते है उसके साथ। संसार में हर 3 महिलाओं में 1 महिला हिंसा से गुजरती है। और जो महिलाऐं आर्थिक रूप से अजाद होती है उनके साथ अन्याय कम होता है। यानि एक तरह से हर वो मां बाप जो अपनी बच्ची को जायदाद नही देते उसके साथ हुई हिंसा के लिए जिम्मेदार होते है। हमारे साथ हुआ और फिर हम अपनी बेटी के साथ करते है और ये अन्याय का चक्र चलता रहता है।

महिलाओं से पुछें कि उनके मन में क्या चल रहा है अभी?

अन्त में इस गीत के साथ बैठक समाप्त करें – 'बढेगें हम उठेंगें हम.....'

तीसरा दिन

आर्थिक आजादी की उड़ान

गतिविधि – छोटी कहानियां

उद्देश्य : आर्थिक आजादी के लिए महिलाओं के रास्ते की दिक्कतों पर चर्चा कर महिलाओं को इस दिशा में कदम उठाने के लिए प्रेरित करना।

प्रक्रिया : हर कहानी को पढ़कर सुनाऐं और उसके बाद पूछें कि उस कहानी में महिला के साथ क्या आर्थिक अन्याय हुआ और क्यों। कहें की अन्त में आप सवाल पूछेगी इसलिए घ्यान से सूने।

1. सुमन और उसका पति रमेश दोनो खेती करते थे। उनके दोनो बच्चे स्कूल में पढ़ते थे। रमेश को उसके दोस्त ने बताया कि वो और लोगो के साथ सूरत में काम करने जा रहा है अच्छा पैसा मिल रहा है। रमेश भी उसके साथ चला गया। वंहा का काम इतना पसन्द आया कि अब रमेश वही कमाने लगा और घर पैसे भेजता। साल में एक बार त्यौहार में पर घर आता। घर की खेती बड़े भाई को खेती करने को दे दी। जो खर्च काटकर अनाज सुमन को दे देते थे। सुमन के समूह में खेती की ट्रेनींग में उन्नत धान की विधि बताई गयी। सुमन अपने जेठानी से बोली की वो अपनी स्कूल वाले खेत पर उन्नत धान लगाएगी सो ये बात जेठ जी को बता दिजीएगा। सुमन के जेठ को अच्छा नही लगा। सुमन ने जेठ से कहा कि वो हल चला दे बाकि वो खुद कर लेगी। एक हफता बिता जेठ ने हल नही चलाया। समय जा रहा था सो सुमन ने अपने मायके से मजदूरी पर एक आदमी को बुलाया और उससे हल चलवाकर धान की रोपाई करली। शाम को सास ने उसे खुब डांटा कि उसने उनके परिवार की बदनामी की। मायके वाले क्या सोचेगें। यंहा तक कि उसके पति तक ये बात पंहुच गयी और उसने भी खुब डांटा।
2. सांवली ने गांव में श्री विधि से धान लगाने की चर्चा सुनी और सोचा कि वो भी लगाएगी। घर में जब पति को बताया तो पति नाराज हो गया। फिर भी उसने हार नही मानी । उसके पति ने उस प्लॉट/खेत की तरफ देखना भी बन्द कर दिया। एक दिन का काम भी नही किया। जबकि सांवली सारे खेतों पर हर साल की तरह काम करती। पति ने उसको धमकी दी थी अगर उस खेत से इस बार अनाज कम निकला तो तू अपनी शकल मत दिखाना। अपना सामान और बच्चे लेकर मायके चले जाना। सांवली हर रात बस इसी चिन्ता में बितती थी कि जाने क्या होगा। 15 दिन हो गए थे उसका खेत एक दम खाली–खाली दिख रहा था। हर दिन भारी होता जा रहा था। पति ने उससे बात तक करना छोड़ दिया था।
3. गीता जब अपने दस्तावेज लेकर बैंक के पास गयी कि उसको किसान क्रेडिट कार्ड बनवाना है। बैक अधिकारी ने मना कर दिया कि तुम्हारे नाम पर जमीन ही नही है तो किसान क्रेडिट कार्ड कैसे बनेगा।
4. आय कमाने के नई गतिविधियां सिखाने के लिए गांव के लोग जिले मे ट्रेनींग में जा रहे थे। भदेली के समूह की ज्यादातर महिलाऐं जा रही थी। पर उसके पति ने साफ मना कर दिया। जाने की जरूरत नही है।

5. रामवती का खेत उसके घर से बहुत दुर स्कूल के पास था। खेत जाते–जाते थक जाती थी। मायके में उसकी सायकिल रखी थी वो गई ओर ले आई। अगले दिन वो साइकिल से खेत गई। शाम को जब वो घर आई तो रात को उसके पंचायत बैठी उसके ससुर ने उसकी शिकायत पति से की। रामवती ने लाज शर्म बेच दी है। फर्राटे से गांव में साइकिल चलाती घूमती है।जो आज तक नही हुआ वो रामवती कर रही है। पूरा गांव उसके साइकिल चलाने को लेकर बाते बना रहा है।
6. संगीता के पति को मरे 3 साल गुजरे थे। उसके 2 बेटियां और 1 बेटा था। सास–ससूर ने उसे घर पर रखने से मना कर दिया। उनका कहना था कि उसकी वजह से उनके छोटे बेटे की तबियत खराब रहती है। उसे देवर और ससूर ने घर से निकाल दिया। मजबूरी में उसने घास जमीन पर एक कच्चा घर बनाया और मजदूरी करके घर चलाने लगी।
7. नर्मदा बहुत डरी सी थी समझ नही पा रही थी कि क्या करें काम पर जाए कि नही। अगर काम पर नही जाएगी तो बच्चों को क्या खिलाएगी। कल ही कि बात है जब वो काम पर गई थी तो सरपंच ने अकेले में उसका हाथ पकड़कर उसको पास खिंचने की कोशिश की। किसी तरह बच के आई।
8. शकुन ने आज नर्सरी लगाने की ट्रेनींग में बहुत कुछ सीखा। पर उसे फिक्र लग रही थी 2 साल के बेटे की जिसको वो छोड़ के आई उसने गौरी को कहा कि वो रात को नही रूक पाएगी। गौरी बोली वो भी साथ चलेगी, उसको भी गाय भैंस को चारा देना होगा। वो दोनो रात को ट्रेनींग से वापस घर आ गई। ट्रेनर भइया को उन पर बहुत गुस्सा आया।
9. रोशनी ने पढ़ाई के बाद अतिथि शिक्षक के लिए फार्म भरें। उसने फार्म में अपने भाई का फोन नम्बर भर दिया था। थोड़े दिन बाद भाई के फोन पर कई बार उसके लिए बेकार के फोन आने लगे । इस बात से उसके पिता को बहुत गुस्सा आया और उन्होनें ने उसको डांटा। बोले कि कोई काम वगैरह नही करना है। घर पर रहो ओर खेती और घर का काम सिखों।

समेटना :

✓ महिलाओं का समानता के 3 प्रकार के रास्तों को बताऐ और उसमें से पर्याप्त समानता के बारे में बताए। बराबरी लाने के 3 प्रकार हो सकते है 1. औपचारिक – जिसमें सभी लोगों के लिए बराबर नियम बनाऐ जाते हैं। 2. सुरक्षात्मक जिसमें महिलाओं की सुरक्षा के नाम पर अलग नियम लगाए जाते है। जैसे– लड़कियों को दूर के स्कूल में पढ़ने न जाने देना। या महिलाओं को घर के पास की बैठकों में ही जाने देना, ताकि वो घर के काम कर सके। जबकि 3. पर्याप्त समानता तब है जब आप व्यवस्था बनाऐ ताकि लड़की भी दूर के स्कूल जा सकें। या घर के कामों में पुरूषों की भागीदारी बढ़ाऐं ताकि महिलाऐ भी बाहर या दूर जा सके। यानी तीसरे तरीके में समाज के भेदभाव के नियमों को तोड़ने की बात की जाती है।

✓ 1. महिलाओं की आर्थिक आजादी के लिए ये 5 बातें जरूरी है– 1. निर्णय में भागीदारी, 2. सम्पति की हिस्सेदारी, 3. आय की हकदारी, 4. तकनिकी जानकारीरोक–टोक से आजाद

✓ इस नारे के साथ ये गतिविधी समाप्त करें –

आय का हक, खर्च का हक, पट्टे का हक, घर का हक
खेती करना नही बस काम हमारा, उस पर भी है अधिकार हमारा।

गतिविधी :आर्थिक उन्नति की ओर

उद्देश्य :

केस – छिनभर्री गांव की महिलाओं ने अपने संगठन को और अपने संसाधनों को मजबूत किया। गांव के नागरिकों की जरूरत और क्षमता के अनुसार आजीविका की योजना बनाई। बेहतर आजीविका के लिए संसाधन कौन कौन सी योजनाओं से मिल सकते है इसकी जानकारी हासिल की। फिर उन्ही योंजना के अनुसार दस्तावेज बनाऐ और संसाधन जुटाए। अपने समूहों और बैंकों से मिले उधार को भी आजीविका के लिए उपयोग किया। इस तरह एक जुट होकर महिला संगठन और ग्राम सभा ने अपने नागरिकों की आमदनी को दोगुना किया। महिलाओं की भागीदारी बराबर के नागरिक की थी। अब उनका प्रयास है खुशहाली के लिए आजीविका के साथ अन्य विकास के मुददों पर भी काम कर अपने गांव को एक समृद्ध और खुशहाल गांव का दर्जा दिलाएगें। इस कहानी को बताने में पिक्चर कार्ड का उपयोग करें।

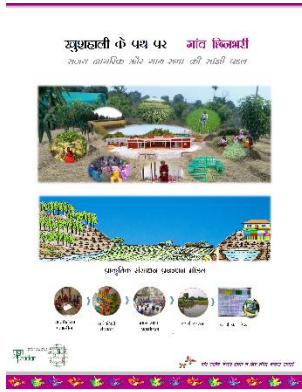

चर्चा के लिए सवाल–

- ✓ छिनभर्री गांव की महिलाओं ने ऐसा क्या किया होगा कि ऐसा सम्भव हो पाया?
- ✓ क्या ऐसा आपके गांव में सम्भव हैं? अगर हां तो कैसे?

चर्चा को समेटना:

- ✓ गरीबी की मार सबसे ज्यादा महिलाओं पर ही पड़ती है इसलिए जरूरी है कि परिवार की आमदनी को बढ़ाने के लिए बढकर काम किया जाए पर साथ ही उस आमदनी का घर में उपयोग समता आधारित हो। समता के बिना आई समृद्धि परिवार में पितृसत्ता के जहर के पेड़ को और भयंकर बना देती है। इसका उदाहरण है – आर्थिक रूप से समृद्ध राज्यों और शहरों में घटता लिंगानुपात।
- ✓ महिलाओं को **लिंगानुपात** के बारे में बताऐं। कोई 5 महिलाओं के घर की जानकारी ले कि उनके घर में कुल कितने पुरूष है और कितनी महिलाऐं। अब उन्हें इसी उदाहरण से बताऐं कि जैसे इन 5 घरों में कुल .....इतने पुरूष और .....इतनी

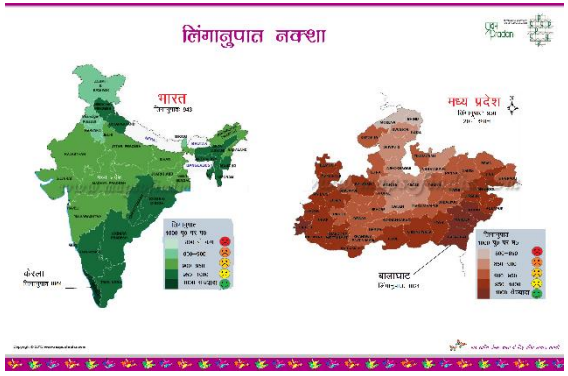

महिलाऐं है। उसी तरह एक गांव, राज्य और शहर का लिंगानुपात लिया जाता है कि उस जगह में 1000 पुरूषों के लिए महिलाओं की संख्या कितनी है। पिक्चर कार्ड दिखाते हुए पूछे कि ये किसका नक्शा है और फिर नक्शों से परिचय कराएं और चर्चा करें।

समापन पाठ– सावित्रीबाई फूले: एक प्रेरणा

सामग्री : पिक्चर कार्ड

सावित्रीबाईफूले

(जन्म 3 जनवरी 1831– मृत्यू 10 मार्च 1897)

महिला सशक्तिकरण केकाम केरास्तेमेंकईबार जब समाज या परिवार की रूकावटों से मन उदास हो तो सावित्री बाई फुलेको याद करें –उनके जीवन की प्रेरक कहानी, मन मेंजरूर एक उम्मीद जगा जाएगी। आज सेलगभग साल पहले, उस जमाने में जब महिलाओं और दलितों को दबाना समाज का रिवाज था, उस समय में एक दलित महिला का इस तरह समाज के दोहरे मापदण्ड को खुली चुनौति देना किसी भी तरह की बहादूरी से कम न था।

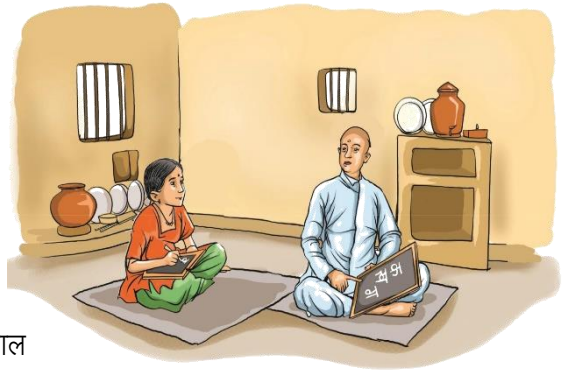

आइए जानतेहैउस महान महिला की प्रेरककहानी।

विरोध के बावजूद पढ़ाई पूरी की

सावित्रीबाई का जन्म महाराष्ट्र के सतारा जिले के नायगांव के एक दलित परिवार में हुआ था। उनकी शादी बचपन में ही पुणे शहर के ज्योतिबा फुले से हुयी। तब वो केवल 9 और उनके पति 13 साल

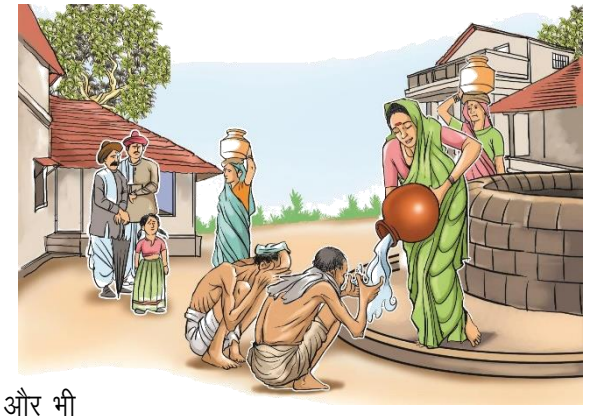

के थे। उस दौर में लड़कियों की पढ़ाई पर सामाजिक पाबन्दी थी। ज्योतिबा उनके 'स्वामी' नही बल्कि उनके दोस्त थे, वो नन्ही सावित्रीबाई की पढ़ने की ललक को भांप गए। पति की मदद से, समाज के विरोध के बावजूद सावित्रीबाई ने अपनी पढ़ाई पूरी की। उसके बाद उन्होने टीचर बनने की ट्रेनींग भी पूरी की।

दलितों को मानव–अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष

आज भी दलितों और आदिवासियों का शोषण किया जाता है उस जमाने तो समाज में उनकी स्थिति और भी खराब थी। गांव के कुओं से दलितों को पानी लेने का अधिकार नही था। सावित्री बाई और उनके पति ने दलितों के लिए पानी की व्यवस्था बनाई। ऊंची जाति के लोगो ने उनका विरोध किया। सावित्रीबाई के भाई ने एक चिट्ठी में यंहा तक लिखा– 'तुम लोग जो काम कर रहे हो वो समाज को भ्रष्ट करने वाला है।' उन्होनें हर ऐसी प्रतिक्रिया को अनदेखा कर, वो किया जो सही था।

जाओ लड़कियों, पाठशाला जाओ....

उस जमाने में, शिक्षा पाने का हक, सिर्फ उच्च वर्गों के पुरूषों के लिए ही था। सन् 1848 में सावित्रीबाई और ज्योतिबा फुले ने लड़कियों का देश का पहला स्कूल खोला और सिर्फ 17 साल की उम्र में सावित्रीबाई उसकी प्रिंसींपल बनी। केवल चार सालों में पति–पत्नि ने बिना किसी सरकारी मदद के, अपने दोस्तों की मदद से, ऐसे 18 स्कूल खोलें। उन्होनें दलितों के लिए प्रौढ़–शिक्षा स्कूल खोला। ये एक बहुत बड़ी क्रान्ति थी। लोगों को प्रेरित करने के लिए सावित्रीबाई ने, कविताऐं लिखी। बच्चियों के लिए लिखी एक कविता, कुछ इस तरह है–

पहला कार्य पढ़ाई, फिर वक्त मिले तो खेल–कूद,

फिर फुर्सत मिले तभी करों घर की साफ–सफाई, चलो, अब पाठशाला जाओ....

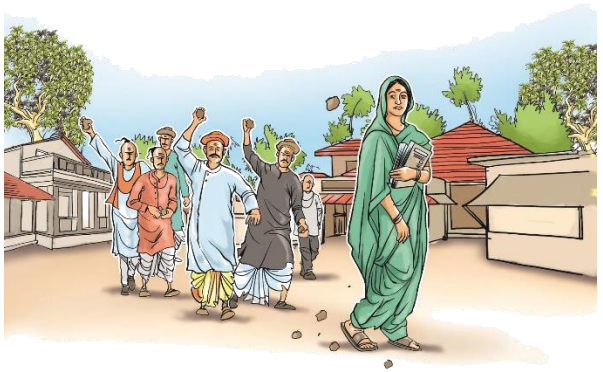

मिली धमकियां कि लड़कियों को बिगाड़ रही है

लड़कियों के स्कूल को चलाने में उन्होंनें बहुत परेशानियां झेली। हर दिन जब वो अपने स्कूल में बच्चियों का पढ़ाने जाती थी तो उन्हें धमकियां मिलती थी कि वो लड़कियों को बिगाड़ रही है। दोनो पति–पत्नि को घर भी छोड़ना पड़ा। सावित्रीबाई जब स्कूल जाती थी तो उच्च जाति के कुछ लोग उनके ऊपर पत्थर, गोबर और मैला भी फेंकते, मगर उन्होनें पढ़ाने का काम जारी रखा। स्कूल जाते समय वो अपने साथ एक साड़ी अलग से ले जाती, एक जिस पर लोग कीचड़ फेंकते उस साड़ी को स्कूल में उतारकर रख देती और दूसरी पहन कर स्कूल में बच्चियों को पढ़ाती।

"महिला सेवा मण्डल' का गठन"

सावित्रीबाई ने "महिला सेवा मण्डल" के नाम से पुणे की महिलाओं के आर्थिक विकास के लिए देश का पहला महिला संगठन बनाया। सदियों से पुरूष पर निर्भर, रूढ़ियों में जकड़ी औरत की छवि को तोड़कर एक आत्मनिर्भर, आजाद औरत की सोच को सजीव किया। 14 जनवरी 1852, मकरशक्रान्ती के दिन महिला सेवा मण्डल ने पुणे में एक सार्वजनिक तिलगुल कार्यक्रम का आयोजन किया। इस सम्मेलन का उद्देश्य महिलाओं को संगठित करना और समाज को महिलाओं के हकों के लिए जगाना था। सावित्रीबाई ने रात में चलने वाले पहले किसान स्कूल की स्थापना भी की।

गर्भवती विधवा महिला को बचाया

उस समय कम उम्र की विधवाऐं अक्सर शोषण का शिकार होती थी। कई गर्भवती विधवाऐं आत्महत्या करने के लिए मजबूर हो जाती थी। सावित्रीबाई और ज्योतिबा ने ऐसी बलात्कार पिड़िता और विधवा महिलाओं के लिए एक आश्रम बनाया, ताकि ऐसी महिलाएं बाहर तिरस्कार सहने की बजाए, गरिमा के साथ बच्चे को जन्म दे सकें। वंहा उन्हें शिक्षा भी दी जाती थी। एक बार सावित्रीबाई और उनके पति ने आत्महत्या करती हुयी एक गर्भवती ब्राहमण विधवा, को बचाया और उसको अपने घर ले आयी। बाद में उस महिला ने एक लड़के को जन्म दिया सावित्रीबाई और ज्योतिबा ने उस बच्चे को अपनाया, जो बड़ा होकर डाक्टर बना।

विधवा भी इन्सान है!

विधवाओं के सिर मुण्डाने को बन्द करवाने के लिए सावित्रीबाई ने हजारो महिलाओं के साथ रैली करी। उन्होंने नाइयों को समझाया कि ये अत्याचार है। विधवा भी इन्सान है उसे भी जिन्दगी की हर खुशी पाने का, हर रंग जीने का हक है। नाई समाज की मानवता जागी और उन्होंने फुले पति–पत्नि का कहा माना और एक दिन की हड़ताल की। ये अपने आप में अनोखी हड़ताल थी। दोनो पति पत्नि ने मिलकर विधवा–विवाह को प्रोत्साहन दिया। उन्होनें कई जोड़ों को जाति की ऊंच नीच को तोड़कर कम खर्च में शादी करने के लिए प्रेरित किया।

रूढ़ियों को तोड़ा

पति की मृत्यु के बाद उन्होंने स्वयं पति की चिता को आग देकर एक और रूढ़ी को तोड़ा, वो भी आज से इतने साल पहले। कुरितियों व पांखण को जड़ से हटानें में उनका जीवन एक उदाहरण है। केवल 23 साल की उम्र में उन्होनें अपनी पहली कविता की किताब लिखी जिसमें उन्होने औरतों और दलितों की सामाजिक दुर्दशा पर लिखा और उसके लिए जिम्मेदार जातिवाद और पितृसत्ता पर कड़ा प्रहार किया। उनकी कविता की कुछ लाइन है–

मनुस्मृति की कर रचना मनु ने,
किया चारवर्ण का विषैला निर्माण
उसकी अनाचारी परम्परा हमेशा चुभती रही
स्त्री और सारे शुद्र गुलामी की गुफा में हुए बन्द
पशु की भांति बसते आऐ दड़बों में।।

रोगियों की सेवा करते हुए हो गयी शहीद !

पूणे में प्लेग की महामारी फैल गयी थी। सावित्रीबाई प्लेग के रोगियों की सेवा करने में व्यस्त थी उनका डाक्टर बेटा भी उनके साथ लगा हुआ था। खबर आयी महा–दलितों की बस्ती में एक रोगी बच्चा हैं। वो वंहा गयी और बच्चे को अपनी पीठ पर उठाकर बेटे के अस्पताल ले आयी। इस घटना के बाद उन्हें भी प्लेग हो गया, और वो रोगियों की सेवा करते हुए शहीद हो गयी।

वे पूरी जिन्दगी समानता के लिए काम करती रहीं । अक्सर हम सोचतें है कि हजारों सालों की जातिप्रथा या पितृसत्ता इतनी जल्दी थोड़े ही खत्म होगें, पर उनकी जिन्दगी ने इस विश्वास को और मजबूती दी कि, कोशिश करने से ही बदलाव होता है।

महिला–अधिकारों व समानता के लिए समर्पित उस क्रान्तीकारी को शत्–शत् प्रणाम।

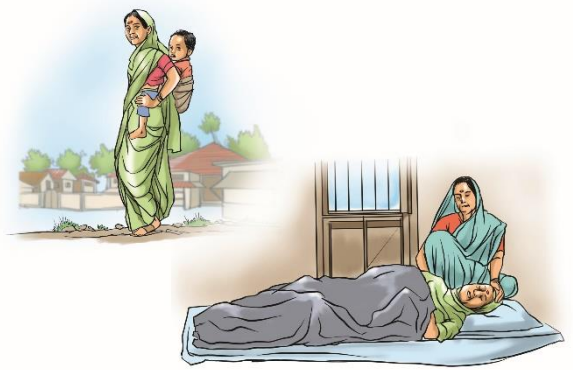

चर्चा के लिए सवाल :

1. इस कहानी को सुनकर आपको कैसा लगा?
2. क्या आज महिलाओं का जीवन खुशहाल है? उनके जीवन में कोई गैरबराबरी नही है ? क्या उनको पुरूष के समान स्वतन्त्रता और अधिकार हासिल है? अगर नही तो वो कौन सी गैरबराबरी है जो महिलाऐं आज भी सह रही है?
3. अगर एक सावित्री एक जिन्दगी में इतना कुछ कर सकती है वो भी उस जमाने में जब महिलाओं पर इतनी पाबन्दिया थी, तो क्या आपके समूह की सभी सावित्रियां मिलकर अपनी और गांव की महिलाओं का जीवन में कुछ ऐसा बदलाव ला सकती है?

अन्त में सहजकर्ता महिलाओं से पुछें कि जेण्डर–शाला का ये सफर कैसा रहा?
अब महिलाओं को 3 समूह में बांटे। उनसे कहें कि पहली बैठक से आज तक बैठक के दौरान आपने क्या क्या बदलाव लाएं उन पर समूह चर्चा करने को कहे–
इस दौरान आप लोगो ने क्या बदलाव लाए?

समूह 1 – खुद में
समूह 2– परिवार व गांव–समाज में
समूह 3– समूह में

चर्चा के प्रस्तुतिकरण के बाद पुछें कि –
कि क्या इतने बदलाव से समानता आ जाएगी कि और बदलाव करने है खुद में, गांव–समाज में समूह में? कुछ एक विचार को आने दे और फिर कहें कि आप आगे कि समानता लाने की योजना गांव संगठन पर जेण्डर समानता उत्सव मनाने का दिन पर करें पूरे गांव के आगे। सबकी रजा मन्दी से दिन तय करें। गांव के सारे समूह एक साथ उत्सव/मड़ई मनाऐं।
अन्त में गीत– 'पर लगा लिए है हमने के पिंजड़े में कौन बैठेगा....के साथ बैठक समाप्त करें।

.....

शब्दावली और परिभाषाएं

लिंग : महिला, पुरूष व अन्य लिंग के व्यक्तियों के शरीर कें अन्तर जो प्रकृति ने बनाये है।

जेण्डर : महिला, पुरूष व अन्य लिंग के व्यक्तियों में ऐसा भेदभाव जो समाज बनाता है ।

लिंगानुपात : किसी भी स्थान पर 1000 पुरूषों की तुलना में जितनी महिलाएं होती है, इस अनुपात को लिंगानुपात कहते है।

पितृसत्ता : पितृसत्ता यानी पितृ यानि पिता (यानि पुरूष) + सत्ता यानि पुरूष की सत्ता।
पितृसत्ता एक सोच है जिसके अनुसार : पुरुष ही परिवार और समाज का मुखिया होता है। घर–परिवार, धर्म–राजनीति, सभी क्षेत्रों में पुरुष की ही चलनी चाहिए। औरत पुरूष की दासी है जिसकाह अपने शरीर, सम्पत्ति, सोच बच्चों–किसी पर हक़ नहीं होता। पितृसत्ता सामाजिक ढाँचों और रिवाजों, सोच और मूल्यों की व्यवस्था है जिसमें महिला को पुरुष के अधीन समझा जाता है। पितृसत्ता समाज, परिवेश, समय, इतिहास इत्यादि के अनुसार ख़ुद को ढालती रहती है। पितृसत्ता में कोई औरत भी सत्तावान हो सकती है बशर्ते वो पितृसतता द्वारा तय की गई सीमा में काम कर रही है।

समता व समानता: समाज की ऐसी व्यवस्था जंहा लोागों को लिंग, जाति, धर्म, रंग, शारिरिक क्षमता आदि की विविधता के बावजूद सभी को समान महत्व और अधिकार मिले हो, को समानता कहेंगें। वर्तमान स्तिथि और लोगों की विविधता को समझते हुए उनके अनुसार उन्हें अलग–अलग सुविधाऐं और हक देने की व्यवस्था को समता कहते है। उदाहरण– घर में अगर 10 रोटी है और 5 लोग है तो सबको बराबर 2 रोटी दे देना समानता कहलाएगा। पर अगर 2 व्यस्क है और 2 बच्चे, एक युवा है तो बच्चों को 1–1, युवा को 2 और बड़ों को 3–3 रोटी देना समता कहलाएगी।

नारीवादी : औरत और मर्द के समान अधिकारों और अवसरों में विश्वास करने वाले महिला या पुरुष।

जेण्डर संवेदी : सभी लिंगों का समान आदर व अधिकार देने को जेण्डर संवेदी व्यवहार कहेगें।

जेण्डर उदासीन : समाज में व्याप्त जेण्डर भेदभाव की हकीकत का आंकलन किए बगैर व्यवहार करना।

जेण्डर असंवेदी : लिंग आधारित भेदभाव करना।

मर्दानगी: पितृसत्ता सोच के आधार पर पुरूषों के लिए जो व्यवहार उचित ठहराया जाता है उन गुणों को मदानगी कहते है। जैसे – मर्द रोते नही है, मर्द को दर्द नही होता आदि।

औरताना/जनाना : पितृसत्ता सोच के आधार पर महिलाओं के लिए जो व्यवहार उचित ठहराया जाता है उन गुणों को जनाना या औरताना व्यवहार कहते है। जैसे –महिलाऐं कोमल होती है, महिला भावुक होती है आदि।

समाजिकरण: पितृसत्ता सोच के आधार पर महिला, पुरूष और तीसरे लिंग के लिए निधारित मापदण्ड में व्यक्ति को ढ़ालने की समाज की प्रक्रिया को समाजीकरण कहेगें। इसके अनुसार औरत, आदमी व तीसरे लिंग का जो स्वरूप हम देखते है वो प्रकृति ने नही बनाया। बल्कि समाज ने उसका निर्माण किया और दण्ड व इनाम की प्रक्रिया से उसे तराशा और कायम रखा।

पहचानें – हमारे जन्म, नागरिकता, स्थान, व्यवसाय आदि के अनुसार जिन बातों से हमें जाना जाता है, उन्हें हम पहचान कहते है। हमारी कई पहचाने होती है, जैसे हम किस लिंग के है, किस धर्म/जाति/समुदाय संस्कृति, स्थान के रहने वाले है, किस रंग के है, किस शारिरिक बनावट या क्षमता के है, हम किस व्यवसाय से है, क्या शैक्षणिक योग्यता है आदि। समाज की भेदभाव वाली व्यवस्था में हमारी कुछ पहचानें हमें ताकतवर बनाती हैं ओर कुछ हमें कमजोर।

सत्ता – किसी एक व्यक्ति या समूह के दूसरे व्यक्ति या समूह के निर्णय को प्रभावित करने को सत्ता कहते है यानि जो व्यक्ति या समूह दूसरे को प्रभावित कर पाय वो सत्तावान है। सत्ता गलत या सही नही होती है वो एक उर्जा की तरह है उसका उपयोग सही या गलत बनाता है। सत्ता के कई केन्द्र भी हो सकते है।

काम का लैंगिक बंटवारा : काम के बँटवारे का वह तरीका जिसमें घर के अंदर के सारे काम औरतों के, बाहर के काम पुरूषों के होते है और गा–बजाकर भीख मांगना तीसरे लिंग का काम होता है

औपचारिक समानता : जिसमें सभी लोगों के लिए बराबर अधिकार दिए जाते हैं।

सुरक्षात्मक समानता : इस तरीकें में समानता लाना तो उद्देश्य होता है पर गैर बराबरी के ढ़ाचे को तोड़ने की कोशिश नही होती बल्कि उसको एक स्थिति मानकर, महिलाओं की सुरक्षा के नाम पर अलग नियम लगाए जाते है।

पर्याप्त समानता : प्र्याप्त समानता में समाज के भेदभाव के नियमों को तोड़ने की बात की जाती है। ये जोर देती है तो क्या अगर लड़की है पर उसके लिए व्यवस्था बनाऐ ताकि वो भी लड़को के समान दूर के स्कूल जा सकें। या घर के कामों में पुरूषों की भागीदारी बढ़ाऐं ताकि महिलाऐ भी बाहर बैठकों या दूर जा कर काम कर सके।

जेण्डर व्यवहारिक आवथ्यकताऐं: इस तरीकें में महिलाओं या तीसरे लिंग की व्यवहीरक आवश्कताओं को पूरा करके उनकी स्थिति में सुधार लाने की कोशिश की जाती है। मूलभूत कारण जिनकी वजह से इनकी स्थिति यंहा तक पंहुची है उन लाना तो उद्देश्य होता है पर गैर बराबरी के ढ़ाचे को तोड़ने की कोशिश नही होती बल्कि उसको एक स्थिति मानकर, महिलाओं की सुरक्षा के नाम पर अलग नियम लगाए जाते है।

जेण्डर राजनितिक आवथ्यकताऐं: इस तरीकें में समानता लाना तो उद्देश्य होता है पर गैर बराबरी के ढ़ाचे को तोड़ने की कोशिश नही होती बल्कि उसको एक स्थिति मानकर, महिलाओं की सुरक्षा के नाम पर अलग नियम लगाए जाते है।

स्टीरियोटिपिकल या परम्परावादी : पितृसत्ता के दायरे में रहकर लिंग के लिए र्निधारित मापदण्ड के अनुसार व्यवहार करना।

आम बना देना या नार्मलाइज देना : पितृसत्ता से हमारी अपेक्षाएं भी प्रभावित होती हैं। जैसे किसी का पति अगर संवेदनशील है और रसोइ में हाथ बटाता है तो उसे कहा जाता है कि महिला कितनी भाग्याशली है। यानी आदमी का संवेदनशील होना एक खास बात बना दी गयी है और उसके रसोई में हाथ न बंटाने को आम बात।

लैंगिक शब्दावली : पितृसत्ता से उपजे शब्द जो उस व्यवस्था को कायम रखने और उसका फैलाव करने में सहयक होते है। जैसे – किसान भाई, यंहा लाखों महिलाएं जो किसानी करती है उन्हें एक शब्द मात्र से अदृश्य कर दिया गया। अधिकतर औरतों पर बनी गालियां भी इसी श्रेणी में आती है और पितृसत्ता का हथियार है।

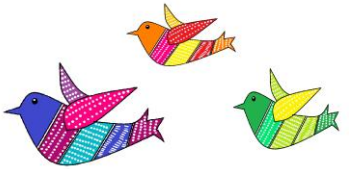

समानता के गीत

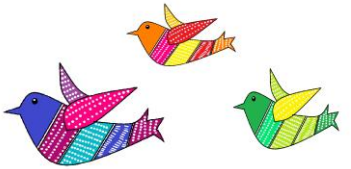

मिलकर हम नाचेंगें गाएगें....

मिलकर हम नाचेंगें गाएगें
मिलकर हम खुशियां मनाएगें
जिन्दगी अपनी सजाएगें।

चिड़ियों से हम चहक ले आएगें
महक हम फूलों से लाएगें।
चहकते–महकते जाएगें।

चुस्ती हम शेरनी से पाएगें
फुर्ती हम हिरनी से लाएगें
शक्ति हम फिर से बन जाएगें।

मोजो से हम मस्ती ले आएगें
पर्वत सी हम हस्ती बनाएगें
आलम हम खुशियों का लाएगें।

जम के हम चीखें चिल्लाएगें
जुल्मों को हम जड़ से मिटाएगें
सोतो को हम जाके जगाएगें।

दायरे हम अपने बढ़ाएगें
बहुतों को हम समझे समझाएगें
गीत हम दोस्ती के गाएगें।

(आओ मिल जुल गाऐं, जागोरी गीत संकलन)

दरिया की क़सम.....

दरिया की क़सम मौजों की क़सम,
ये ताना बाना बदलेगा
तू खुद को बदल तू खुद को बदल,
तब हीं तो ज़माना बदलेगा

तु चुप रह कर जो सहती रहीं,
तो क्या ये ज़माना बदला है
तू बोलेगीं मुंह खोलेगीं,
तब हीं तो ज़माना बदलेगा

दस्तूर पुराने सदियों के,
ये आये कहां से क्यों आये
कुछ तो सोचो कुछ तो समझो,
ये क्यों तुमने हैं अपनाये

ये पर्दा तुम्हारा कैसा है,
क्या ये मज़हब का हिस्सा है
किसका मज़हब कैसा पर्दा,
ये सब मर्दों का किस्सा है

आवाज़ उठा क़दमों को मिला,
रफतार ज़रा कुछ और बढ़ा
पूरब से उठो पश्चिम से उठो,
उत्तर से उठे दक्षिण से उठो
फिर सारा ज़माना बदलेगा
(आओ मिल जुल गाऐं, जागोरी गीत संकलन)

जो प्यार से भरा है.....

जो प्यार से भरा है वहीं तो परिवार है
जो फूल सा खिला है वहीं तो परिवार है

परमेश्वर बना घूमें पति वो बेकार है
जो दोस्त बन लुभाएं उसीं का इंतजार है

जो मां बन पनपा न पाएं साथीं बेकार है
जो दूजों को बनाएं उसीं से हमें प्यार है

बच्चे जो बहला न पाएं वो साथीं बेकार है
जो बच्चों सा बन जाएं उसीं से हमें प्यार है

खाना जो बना न पाए साथीं बेकार है
जो हाथों से खिलाए,इस दिल का वो करार है

जायदाद हथियाने वाला, साथीं बेकार है
मिल–बांट के रह पाए, वो हीं तो सच्चा प्यार है

पैसों पे मिटने वाला, साथीं बेकार है
जो हम पे मर–मिट जाए उसीं का इन्तजार है

(आओ मिल जुल गाएं, जागोरी, गीत संकलन)

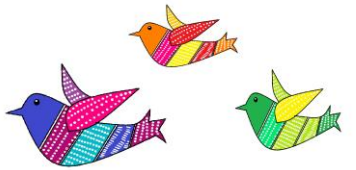

तोड़–तोड़ के बंधनों को......

तोड़ तोड़ के बन्धनों को देखों बहनें आतीं हैं
ओ देखो लोगों देखो बहनें आतीं हैं
आएगीं जुल्म मिटाएगीं देखों नया जमाना लायेगीं.

तारीकीं को तोड़ेगीं वो खामोथीं को तोड़ेगीं
हां मेरीं बहनें अब खामोथीं को तोड़ेगीं
मोहताजीं और डर को वो मिलकर पींछे छोड़ेगीं
हां मेरीं बहनें अब डर को पीछे छोड़ेगीं
लिडर आजाद हो जाएगीं
अब वो सिसक सिसक के न रोएगीं । तोड़...

मिलकर लड़तीं जाएगीं वो आगे बढ़तीं जाएगीं
हां मेरीं बहनें अब आगे बढ़तीं जाएगी
नाचेंगीं और गाएंगीं वो फनकारीं दिखाएगीं
हां मेरीं बहनें अब मिलकर खुथीं मनाएगीं
गया जमाना पिंटनें का,जीं अब गया जमाना
मिटने का।तोड़....

बहनें पढ़ने जाएगीं और अपना ज्ञान बढ़ाएगीं
हां मेरीं बहनें अब अपना मान बढ़ाएगीं
नये ज्ञान कीं रोथनीं वो घर घर में पंहुचाएगीं
हां मेरीं बहनें अब हर घर को महकाएगीं
दींप जलेगें समता के जीं अब गींत चलेगें समता
के । तोड़..

(आओ मिल जुल गाऐं, जागोरीं गींत संकलन)

धींरे–धींरे आई हममें चेतना......

धींरे–धींरे आई हममें चेतना
हां जीं धींरे–धींरे आई हममें चेतना
अब रूकेगें न किसीं भीं हाल, आ गई चेतना
अब पूछेगें हम–2 खूब सवाल, आ गई...

कौन साथीं कौन दुश्मन है, हां जीं कौन साथीं ...
अब करेगें, अब करेगें हरेक कीं पहचान,आ गई...

ओ पंडित ओ मुल्ला जीं, सुनों पटेल जीं,
नेताजीं हां जीं ओ पंडित
अब गलेगीं न–2, आपकीं दाल, आ गई......

क्या हमारा फर्ज है और क्या हमारा धर्म है हां जीं
क्या हमारा–2 इसका फैसला करेगें नहीं आप, आ
गई.....

आधा भारत नारीं है जब आधा भारत नारीं है
वो बढ़ेगीं तो,वो बढ़ेगीं तो आगे बढ़े देश, आ गई.

स्वर्ग का चक्कर छोड़कर, हां जीं जन्नत का चक्कर
छोड़कर जमीं पर लाएगें नया संसार
आ गई......

(आओ मिल जुल गाऐं, जागोरीं गींत संकलन)

सब मिलके........

सब मिलके घर को चलाएगें सब मिलके
मिल–जुल के समता बनाएगें मिल–जुलके

खाना बनाने का वक्त जब आया
बींवीं बनाए दाल बलम फुलके मिल–जुलके

पैसा कमाने का वक्त जब आया
बींवीं लाऐ नोट भारीं, बलम हलके, मिल–जुलके

बच्चे खिलाने का वक्त जब आया
बींवीं बिछाऐं आंखे, बलम पलकें मिल–जुलके

बच्चे पढ़ाने का वक्त जब आया
बेटा जाए स्कूल, बेटीं कॉलेज, मिल–जुलके

खेलने–कूदने का वक्त जब आया
बेटा मारे चौक्के, बेटीं छक्के, मिल–जुलके

जायदाद बांटने का वक्त जब आया
बेटा–बेटीं दोनो पाएं हक अपने, मिल–जुलके

न कोई देवता न कोई दासीं
न कोई आगे न कोई पींछे
आंखों से देखो सबके खुशीं छलके,
मिल–जुलके

(आओ मिल जुल गाऐं, जागोरीं गींत संकलन)

देश में गर औरतें.....

देश में गर औरतें अपमानित है लाचार है
दिल पे रख कर हाथ कहिऐ देया क्या आजाद है

जिनका पैदा होना हीं अपथकुन है नापाक है
औरतों की जिन्दगी ये जिन्दगी क्या खाक है

कहने को इस देश में है देविया तो बेशुमार
कर नहीं पाई वो लेकिन औरतों का बेड़ा पार

सदियों से हम सह रहीं है और न सह पाएगीं
ठान लीं है लड़ने की गर लड़ के हीं जी पाएगीं

चुप है लेकिन ये न समझो हम सदा को हारे है
राख के नींचे अभीं भीं धधक रहे अंगारे है

(आओ मिल जुल गाऐं, जागोरी गीत संकलन)

अपने सपने सजाएं.....

अपने सपने सजाऐ तो बड़ा मजा आऐं
उनको सच कर पाऐं तो बड़ा मजा आऐं

पेड़ों और पौधों के रंगों को जाने–2
चिड़िया–चौपाओं की भाषा पहचाने
संग नदियों के दौड़ लगाऐं
अपनी दुनिया सजाएं तो बड़ा मजा आए

मिलजुलकर अपना समाज संजाऐं–2
हक बराबर का सबको दिलाऐं
कोई भूखा न रह जाए तो बड़ा मजा आए
हर बच्चा शिक्षा पाऐ तो बड़ा मजा आए

हक अपने जाने और फर्ज पहचाने
गड़बड़ मिटाने का काम अपना माने
पूरी पृथ्वीं को कुनबा बनाऐं
बहनचारा बढ़ाऐ तो बड़ा मजाएं

(मकाम संकलन, नथनिया हाले लोक गीत की धुन पर)

औरते उट्ठीं नहीं तो.....

औरतें उट्ठीं नहीं तो जुल्म बढ़ता जाएगा
जुल्म करने वाला सीना जोर बनता जाएगा

दिल में डर का जो किला है
तोड़ दो अन्दर से तुम
एक हीं धक्के में
अपने आप हीं ढ़ह जाएगा–2
औरतें उट्ठीं नहीं.....

आओं मिलकर अब करें
अधिकार अपना छिन लें
काफिला अब चल पड़ा है
अब ना रोका जाएगा –2
औरतें उट्ठीं नहीं.....

(आओ मिल जुल गाऐं, जागोरी गीत संकलन)

बीज लगाकर खेतों को....

बीज लगाकर खेतों को मैनें भी सजाया रे
कमर झुका निंदाई की, उपज को बढ़ाया रे
लीप पोत कर कोठी में बीजों को बचाया रे
कहे क्यों फिर लोग रे, कि मै तो हूं किसान नहीं।.....

जनमी जंहा मै, वो घर भी नहीं मेरा रे
कानून कहे सम्पति पर बेटी हक तेरा रे
सब बोले जमीन ली तो भाई को गवांएगी
कैसा ये प्यार भाई रे जो खाए है जमीन मेरी।
कहे क्यों .....

खेती करूं घर संभालूं काम का मेरे पार नहीं
बिन पैसे की मजदूर हूं मैं, आराम का नाम नहीं
पति के रहमों पर रहूं, हक का निथान नहीं
कैसा ये न्याय पति रे, क्या मै हूं इन्सान नहीं।
कहे क्यों .....

न पट्टा मेरे नाम रे, न क्रेडिट का ही कार्ड रे
घर, बाड़ी, गाय भैंस कुछ न मेरे नाम रे
रोजगार के खाते पे भी उन्ही का निशान रे
रहू क्यों गुमनाम मैं क्यों मेरा कही नाम नहीं

(मकाम गीत संकलन, चारूल और विनय के द्वारा सृजित ष्काम के हकष गीत की लय पर आधारित)

अपनी धरती सजाऐं.....

अपनी धरती सजाऐ तो बड़ा मजा आए
उसे अपना बनाऐ तो बड़ा मजा आए

सअदियों से धरती से नाता बनाया
खेतों में सयोना है हमने उगाया
अब जमीनों पे हक भी हम चाहें
हम भी मालिक बन जाए तो बड़ा मजा आए
जमींदार बन जाएं तो बड़ा मजा आए....

मेहनत हमारी और ज्ञान हमारा
फिर क्यों नहीं है मान हमारा
हुक्मरानों को कोउ समझाएं
हम भी एक्सपर्ट कहलाऐ तो बड़ा मजा आएं....

सारे जमाने की हम ही जड़ें हैं
हमारी बदौलत सब आगे बढ़ेंहै
हम क्यों कर यू नींचे पड़े है
हम भी आगे बढ़ जाऐ तो बड़ा मजा आऐं.....

मिल–जुल कर नए कानून बनाऐं
हक बराबर के सबको दिलाऐं
कोई आधा न पाए तो बड़ा मजा आए
कोई ज्यादा न पाऐ तो बड़ा मजा आए.....

(आओ मिल जुल गाऐं, जागोरी गीत संकलन)

पर लगा लिए है हमनें.....

पर लगा लिए हैं हमने
अब पिंजड़ों में कौन बैठेगा, जरा सुन लो..
..
जब तोड़ दी है जंजीरें –2
तो कामयाब हो जाएगें जरा सुन लो.....
खड़े हो गए है मिल के –2
तो हम को कौन रोकेगा, जरा सुन लो.....
दीवारे तोड़ दी हमने –2
अब खुल कर सांस लेगें, जरा सुन लो..
...
औरों की ही मानी अब तक– 2
अब खुदी को बुलन्द करेंगें, जरा सुन लो..
...
देखो सुलग उठी चिंगारी –2
अब जुल्मों की शामत आयी है, जरा सुन लो....
पितृसत्ता' के बनाए कानून –2
अब हमको मंजूर नहीं है, जरा सुन लो....

(आओ मिल जुल गाऐं, जागोरी गीत संकलन)

जेण्डर–शाला मॉड्यूल

एक सुन्यायी और प्रगतिशील समाज की नींव जेण्डर समानता के मुल्यों पर ही रखी जा सकती है। यह एक मौलिक मानव अधिकार भी और सतत विकास के लिए आवश्यक पूर्वस्थिति भी। संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा सतत विकास लक्ष्य–5 (***Sustainable Development Goal-5***) के लिए हम सभी संकल्पबद्ध है। गांवों में समानता आधारित सतत विकास के एप्रोच को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जेण्डर–पाठशाला की परिकल्पना की गयी। महिला समूहों में जेण्डर की सोच विकसित करने और उस सोच को समुदायिक विकास के कार्य में उतारने के लिए गांव स्तरिय चर्चाओं की सामग्री और प्रक्रियाओं को जेण्डर–पाठशाला माड्यूल के रूप में संयोजित किया गया है।

प्रदान

ए–22, 2 फ्लोर, सेक्टर 3, नोएडा– 201301,

फोन– 0120–4800800, ई मेल : headoffice @pradan.net